सी डैक
CDAC

अभिव्यक्ति

वार्षिक हिन्दी पत्रिका

आठवां अंक
सितम्बर 2016

प्रगत संगणन विकास केन्द्र

अभिव्यक्ति

संरक्षक

वी. के. शर्मा

संपादक

सुनीता अरोड़ा

डॉ. आरती नूर

संपादन सहयोग

डॉ. सोमी राम

डॉ. किरन शुक्ल

अजय पाल

विशेष सहयोग

नवीन चन्द्र

कवर डिजाइन

अमिय मोहंती

प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं, उनसे सी-डैक, नोएडा और संपादकों का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सी डैक
CDAC

प्रगत संगणन विकास केन्द्र

अनुसंधान भवन, सी-56/1, सैक्टर-62

नोएडा- 201307 (उ.प्र.)

फोन: 0120-3063311-13, फैक्स:0120-3063317

विषय सूची

क्रम सं.	रचना	लेखक/संकलनकर्ता	पृष्ठ सं.
1.	डिजिटल भारतः भारत सरकार द्वारा की गई प्रमुख 10 डिजिटल पहल (लेख)	सुनीता अरोड़ा	05
2.	सी-डैक - गौरवशाली अतीत एवं भविष्य (लेख)	अमित अटेरिया	07
3.	बुराई से छुटकारा पाना (लेख)	उत्तम कुमार	08
4.	सी-डैक पुस्तकालय (लेख)	नीरू शर्मा	09
5.	नैनो टेक्नोलॉजी (लेख)	अमिय मोहंती	11
6.	नि:स्वार्थ जीवन (लेख)	दीपांकर गांगुली	12
7.	इंटरनेट स्पीड धीमी क्यों (लेख)	अमित कुमार	13
8.	एक अपील (लेख)	शिव कुमार शर्मा	14
9.	कंप्यूटर लर्निंग से होने वाले अद्भुद कार्य (लेख)	दीपांकर गांगुली	15
10.	सूचना सुरक्षा शिक्षा एवं जागरूकता (लेख)	नेहा बाजपेयी	17
11.	क्या है जी.पी.एस.? (लेख)	अमिय मोहंती	18
12.	गूगल सर्च की हिस्ट्री ऐसे डिलीट करें (लेख)	बालासुब्रह्मनियम एम.	20
13.	साइबर सुरक्षा (लेख)	मुकुंद कुमार रॉय	20
14.	नेविगेटर (लेख)	रजत	22
15.	जीवन रक्षक 'रक्त दान' (लेख)	रामजी गुप्ता	23
16.	दान की भावना (लेख)	अनिल कुमार	24
17.	निरालाः कुछ अनुभूतियां, कुछ स्मृतियां (लेख)	डॉ. किरन शुक्ल	25
18.	गंगा (कविता)	निष्ठा जायसवाल	26
19.	मेरा सुनहरा गांव (लेख)	उमेश कुमार	27
20.	मेरी काज़ा यात्रा (लेख)	भूपेन्द्र कुमार	28
21.	बदलते परिप्रेक्ष्य में जीवन के लक्ष्य एवं उद्देश्य (लेख)	राजेन्द्र सिंह	31
22.	पुस्तक समीक्षा (लेख)	रानू मुखर्जी	33
23.	विचारों की शक्ति (लेख)	शिव कुमार शर्मा	34
24.	अनूठे लम्हे (कविता)	अजय पाल	35
25.	जीवन एक उपहार है (लेख)	अनिल कुमार	36
26.	परिपक्वता (सूक्तियां)	राजेन्द्र सिंह	37
27.	मां - मां ही होती है (लेख)	पुनीत सिंह	38
28.	माँ ने सिखाया (कविता)	नीरू शर्मा	39
29.	उंगलियों में रिश्ता (लेख)	भुबन दास	40
30.	अनमोल बूंद (कविता)	रजत	41
31.	नन्ही मुस्कान (कविता)	राहुल यादव	42
32.	ख़्वाहिश (कविता)	राजेन्द्र सिंह	42
33.	समझौता (कविता)	पुनीत सिंह	43
34.	कंप्यूटर जी (कविता)	डॉ. किरन शुक्ल	44
35.	वर्ष 2015 में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में सी-डैक, नोएडा की उपलब्धियां		45
36.	राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम 2016-17 में अनुकरणीय प्रमुख बातें		46
37.	हिन्दी पखवाड़ा 2015		47

निदेशक, सी-डैक, नोएडा का संदेश

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। सरकारी कामकाज में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करने के साथ-साथ हमारा अधिकांश चिंतन मूल रूप से हिन्दी में ही होता है। हमारे कार्मिकों द्वारा 'अभिव्यक्ति' पत्रिका में हिन्दी में चिंतन की इसी मूल अवधारणा को आत्मसात किया गया है। कुछ तकनीकी लेखों में हमारे कार्मिकों ने हिन्दी में मूल लेखन के प्रति सहमति जताई है। पत्रिका में प्रस्तुत लेख हमारे अप्रतिम एवं मूल चिंतन का ही परिणाम है एवं कुछ लेखों को देखकर यह मिथक सा ही लगता है कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषयों पर हिन्दी में लेखन में कठिनाई होती है। सी-डैक की गृह-पत्रिका का आठवां अंक अपने आकर्षक कलेवर सहित आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। इसके तकनीकी लेख, आलेख, कविताएं आदि, आप सबके लिए उपयोगी होंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। अगर आपने इस अंक के लिए नहीं लिखा है तो अगले अंक के लिए पूरे मनोयोग से सुरम्य और सरस लेख एवं रचनाएं तैयार रखें। हम आगे बढ़ेंगे और अपनी सोच को हिन्दी की उड़ान देंगे तभी हमारी संस्था बढ़ेगी।

पत्रिका के संपादन में संलग्न स्टाफ की मैं हृदय से सराहना करता हूँ। मैं विशेषकर, ग्रुप समन्वयक, एस.एन.एल.पी., हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं हिन्दी प्रकोष्ठ के अधिकारियों के अथक प्रयत्नों एवं सहयोग को भी समुचित सम्मान देता हूँ।

(वी. के. शर्मा)

संपादकीय

अभिव्यक्ति मन एवं विचारों का वह प्रकटन है जो गद्य, पद्य, आलेख एवं कविताओं के स्वरूप में उभरकर हमारे सम्मुख व्यक्त होता है। यह सीमा में नहीं बंधा होता और अनेक उद्गारों एवं आयामों से रचनाकर्मी को वह सम्मान एवं संतोष दिलाता है जो उसकी अपनी धरोहर है। विचारों एवं अवसरों के उभरने पर कोई विरला ही अपने को रोक पाता है, और शुरू होती है शब्दों को उकेरने की प्रक्रिया। विचारों एवं पलों को एक सूत्र में पिरोने का प्रयास इस 'अभिव्यक्ति' पत्रिका में किया गया है। हम वह तिनका है जिसे जोड़कर घरौंधा बनाया गया है और सी-डैक के उदीयमान चिन्तन को पत्रिका का यह स्वरूप दिया गया है। हमारा प्रयास रहे कि जब भी विचार कौंधे उसे लेखन का मूर्त स्वरूप दें, विचारों के ये बादल जब कौधेंगे तभी रचनाधर्मी का लेख प्रस्फुटन होगा, उसे जर्रे-जर्रे में उस स्वरूप को खोजना होगा जो सी-डैक के चिन्तन एवं अभिव्यक्ति को एक पहचान दिला सके। अभिव्यक्ति पत्रिका हमें यही संदेश देती है।

लेखन वही प्रभावोत्पादक होता है जो उत्तेजना न पैदा करे, लेख से समरसता एवं उन्नति का स्वर फूटे। हमारे पास अनेक रचनाएं एवं आलेख प्रकाशन हेतु आए परन्तु श्रेष्ठ लेख एवं प्रेरणाप्रद प्रसंगों तथा कविताओं का ही चयन किया जा सका तथा पिछले क्रम की अपेक्षा सी-डैक में वेबसाइट, एन.ओ.डी., कार्यकारी सारांश, सभी आदेश एवं पत्राचार तथा टिप्पणियां द्विभाषी जारी की गईं, जो कि सरकारी काम-काज में हिन्दी के प्रयोग का एक परिचय देती हैं, परंतु मौलिक सोच एवं चिंतन अपनी ही भाषा हिन्दी में करने की दिशा में भी हम पीछे नहीं रहे हैं। प्रस्तुत सभी लेख एवं प्रसंग कार्मिकों द्वारा हिन्दी में अपने ही चिंतन एवं सोच के परिचायक हैं।

यह पत्रिका हिन्दी में हमारे मूल चिंतन का पर्याय बनकर आपके समक्ष प्रस्तुत की जा रही है। आपके बहुमूल्य सुझावों का हमेशा स्वागत रहेगा।

- संपादक

डिजिटल भारतः भारत सरकार द्वारा की गई प्रमुख 10 डिजिटल पहल

- सुनीता अरोड़ा
संयुक्त निदेशक

डिजिटल इंडिया की महत्वाकांक्षी परियोजनाएं कई नए कारणों से समाचार की सुर्खियां बनती रही हैं। कुल एक लाख करोड़ की लागत की इस परियोजना का उद्देश्य भारत देश को एक ज्ञान संपदा के रूप में विकसित करना है। इसका उद्देश्य तकनोलॉजी अवसंरचना एवं नागरिकों को सरकार की ओर से दी जाने वाली सुविधाओं को आम आदमी तक पहुँचाना है। इनमें से प्रमुख 10 पहलों को नीचे बताया गया हैः

डिजिटल लॉकर

राज्यों, म्युनिसिपल या अन्य संस्थाओं द्वारा जारी जन्म प्रमाणपत्र, पैनकार्ड तथा अन्य प्रमाण- पत्रों एवं अन्य दस्तावेजों को डिजिटाइज़ करके कहीं भी प्रयोग कर सकते हैं। इसके लिए सरकार एक राष्ट्रीय Depository बनाएगी, जहां ये दस्तावेज मौजूद रहेंगे। प्रत्येक प्राइवेट लॉकर में सरकार द्वारा डिजिटली जांच किए गए महत्वपूर्ण दस्तावेज़ स्टोर रहेंगे, हार्डकॉपी के बजाए जांच किए गए दस्तावेजों वाले उस क्लाउड फोल्डर का लिंक शेयर किया जा सकेगा।

डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट

'जीवन प्रमाण' स्कीम से करोड़ों सरकारी कर्मचारियों को सुविधा मिली है। प्रत्येक वर्ष नवम्बर माह में इसके माध्यम से पेंशन-भोगी डिजिटल जीवन प्रमाण-पत्र दे सकते हैं। इलेक्ट्रॉनिकी एवं आई.टी. विभाग द्वारा विकसित एक सॉफ्टवेयर की सहायता से पेंशन-भोगी अपने मोबाइल या कंप्यूटर के साथ बायोमीट्रिक रीडिंग डिवाइस प्लग करके अपने आधार और बायोमीट्रिक ब्यौरे को रिकार्ड कर सकते हैं। पेंशन-भोगी के खास ब्यौरे, जिसमें तारीख, समय और बायोमीट्रिक सूचना होगी, उसे केन्द्रीय डाटाबेस पर रियलटाइम आधार पर अपलोड किया जाएगा। जिसे अंत में पेंशन प्रदायी एजेंसी द्वारा एक डिजिटल जीवन प्रमाण-पत्र के रूप में एक्सेस किया जा सकेगा।

मनरेगा को डिजिटल संवर्धन

ग्रामीण रोजगार संवर्धन योजना मनरेगा के कार्य को डिजिटल बढ़ावा देने के लिए यह एक सराहनीय पहल की गई है। कुल 35,000 ग्राम-पंचायतें मोबाइल निगरानी प्रणाली के माध्यम से बेहतर कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए समाविष्ट की गई हैं।

इस पहल से कार्यान्वयन एजेंसियों को कार्य-स्थल से मूर्त (Live) डाटा, डाटाबेस को ऑनलाइन और रियल-टाइम अपडेट करना, पूर्ण पारदर्शिता हेतु आंकड़ों की वास्तविक दृश्यता एवं सरल जांच के लिए जिओटैगिंग सहित परिसंपत्तियों की स्थिति सुनिश्चित की जा सकेगी।

ट्विटर संवाद

सबसे अधिक प्रचलित पहलों में से एक है, ट्विटर संवाद। जिससे नागरिक सबसे पहले सरकार की नई पहल एवं कार्रवाई को जान सकेंगे। इस सेवा के आधार पर नेता एवं सरकारी एजेंसियां लोगों से ट्वीट एवं एस.एम.एस. के माध्यम से संपर्क कर सकते हैं।

मदद

इस पोर्टल की सहायता से विदेश में रह रहे भारतीय नागरिकों की शिकायतों का शीघ्र हल निकालने हेतु ऑन-लाइन कांसलर समस्याएं दर्ज कर सकते हैं। इस पहल से शिकायतों को आगे भेजने एवं निपटाने में गति मिलेगी और बढ़ते हुए अनसुलझे मामलों का पता लगाने और उनका हल निकालने में सुधार आएगा। सर्वाधिक प्राथमिकता किसी भी नागरिक के अंतिम अवशेषों को वापस लाने से संबंधित मामलों में दी जाएगी।

एस.एम.एस. आधारित चक्रवाती तूफान चेतावनी प्रणाली

यह कार्यक्रम एस.एम.एस. आधारित चक्रवाती तूफान चेतावनी प्रणाली एवं डिजास्टर एलर्ट सिस्टम बनाने के लिए है। चेतावनी पर सूचना सभी जिला प्रशासन, मछुआरों, किसानों एवं आम-जनता को मिल जाया करेगी। यह प्रक्रिया चालू होने में कुछ समय और लग सकता है, क्योंकि इसमें काफी मात्रा में डाटा का समावेश करना होगा।

सिंगल रिटर्न फाइल करने के लिए फर्मों हेतु ऑन-लाइन सुविधा

व्यापार करने में आनेवाली जटिलताओं एवं लागत को कम करने के प्रयास से सरकार द्वारा एक ऑनलाइन सुविधा प्रदान की गई है जिसमें फर्मों को एक कॉमन रिटर्न दाखिल करने की सुविधा दी गई है, जिससे आठ श्रमकानून एक ही बार में अनुपालित हो सकेंगे। इससे कंपनियां सिंगल यूनिफाइड रिटर्न फाइल कर सकती हैं, जिससे व्यापार सौदों की लागत कम हो सकेगी।

48 घंटे में पैन-कार्ड जारी करने की सुविधा

एक ऑनलाइन सुविधा जिसके अंतर्गत 48 घंटे के अंदर पैन कार्ड जारी हो जाएगा। इस पहल के अंतर्गत पैन-कार्ड प्राप्त करने में मदद के लिए समूचे देश में विशेषतः ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष कैंप आयोजित किए जाएंगे।

ई-मनी

डाक मंत्रालय ने अपने पोस्ट ऑफिसों में इलेक्ट्रॉनिक मनी देने की योजना बनाई है। पहले मनीऑर्डर देने में लगभग एक हफ्ते का समय लगता था परंतु अब दूसरे ही दिन मनीऑर्डर मिल जाया करेंगे। साथ ही यह समूची प्रक्रिया सुरक्षित और तेजी से चलेगी। इससे मनीआर्डर पर मिलने वाले कमीशन में अतिशय आर्थिक वृद्धि हुई है।

प्रगति

यह जनता की समस्याओं को हल करने के लिए एक अंतःक्रियात्मक प्लेटफार्म है। इसका लक्ष्य सरकार के कार्यक्रम एवं योजनाओं के साथ ही राज्य सरकार की पहल और आम आदमी की समस्याओं की निगरानी और पुनरीक्षण करना है। इस कदम से सरकार और अधिक समर्थ एवं उत्तरदायी होगी।

(डाटा क्वेस्ट से साभार) ......

♦♦♦

सी-डैक - गौरवशाली अतीत एवं भविष्य

- अमित अटेरिया
डिजाइन एवं डेवलपमेंट

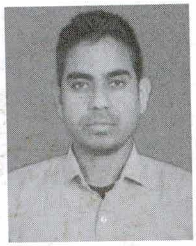

यह 1985 के पतन का दौर था और भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री अमेरिका से खिन्न होकर लौटे थे। एक सुपर कंप्यूटर की खरीद में उनका पहला प्रयास विफल रहा था। तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति ने बड़ी विनम्रता से इस याचिका को खारिज कर दिया था। वर्ष, 1985 में भारत को एक सुपर कंप्यूटर की दरकार थी, जोकि हमारे किसानों के लिए और बड़े पैमाने पर हमारी कृषि के लिए बहुत महत्वपूर्ण था। साथ ही मौसम की भविष्यवाणी से लेकर, भारतीय विज्ञान, आधुनिक शिक्षा एवं अनुसंधान के लिए एक शक्तिशाली सुपर कंप्यूटर की आवश्यकता थी। उस समय केवल अमेरिका के पास ही सुपर कंप्यूटिंग क्षमता थी और अमेरिका की कंपनी 'क्रे' सुपर कंप्यूटर में सबसे अग्रणी थी। जापान भी सुपर कंप्यूटर बनाने की कोशिश कर रहा था लेकिन उसके पास सॉफ्टवेयर क्षमताओं की कमी थी। हम चाहते थे कि हमें क्रे सुपर कंप्यूटर मिल जाए, परन्तु अमेरिका के इन्कार के बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री के भारत को 21वीं सदी में ले जाने एवं एक बेहतर देश बनाने के सपने को बड़ा झटका लगा था। अमेरिकी राष्ट्रपति को समझाने के कई प्रयास विफल हो चुके थे तथा वर्ष 1987 में भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री को स्पष्ट तौर पर अमेरिकी दरवाजे बंद दिखाई दिए। भारतीय राजनयिक को पहले से ही अंदेशा था कि अमेरिका कभी भी एक उन्नत एवं नवीनतम तकनीक किसी को नहीं सौंपेगा, खासतौर पर भारत को तो बिल्कुल नहीं जो, उस समय एक उभरता हुआ देश था।

उस समय विदेश मंत्रालय के अधिकारियों ने यह सुझाव दिया कि सुपर कंप्यूटर खरीद में सोवियत संघ हमारी मदद कर सकता है। भारत के सोवियत संघ से अच्छे रिश्ते थे तथा यह बात एक अतिरिक्त लाभ वाली थी। सोवियत संघ के साथ करार होने से पहले ही अमेरिका ने फिर दखलअंदाजी कर दी तथा सोवियत संघ ने यह प्रस्ताव वापस ले लिया। उसी समय आई.बी.एम. नामक कंपनी भी भारत में सुपर कंप्यूटर प्रयोगशाला बनाना चाहती थी परंतु अमेरिका के लगातार विरोध के कारण यह भी संभव नहीं हो सका। अमेरिका का दावा था कि भारत सुपर कंप्यूटर का इस्तेमाल अंतरिक्ष, परमाणु कार्यक्रम एवं सैन्य रक्षा के रूप में कर सकता है।

सी.एस.आई.आर. (वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद) के वर्ष 1987 के एक सम्मेलन में इस विषय पर चर्चा की गई। इस सम्मेलन में देश के कई जाने-माने वैज्ञानिकों ने भाग लिया था। उस सम्मेलन में भी प्रधान मंत्री को बताया गया कि भारतीय दिमाग भी अमेरिकी एवं यूरोपीय लोगों से समान रूप में शक्तिशाली है। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए उन्होंने इस प्रस्ताव पर अपनी सहमति दे दी। इस प्रकार इस परियोजना को सी.एस.आई.आर. के द्वारा एक नई वैज्ञानिक संस्था सी-डैक को स्थानांतरित कर दिया गया। सी-डैक की स्थापना सैम पित्रोदा के सी.डॉट मिशन के आधार पर की गई थी।

इस परियोजना की शुरूआत वर्ष 1988 में गुडी पड़वा नामक पर्व के दिन पुणे में हुई। डॉ. विजय भाटकर जिन्हें इस परियोजना के वास्तुकार के रूप में जाना जाता है, को इस संस्था की बागडोर सौंपी गई। इस परियोजना को कुल 30 मिलियन डॉलर की निधि उपलब्ध कराई गई तथा देश भर से कुशल वैज्ञानिकों को इस परियोजना पर काम करने के लिए आमंत्रित किया गया। हर वैज्ञानिक महान प्रेरणा के साथ एक उन्नत तकनीक वाली इस जटिल परियोजना पर काम करने लगा। तीन वर्षों के भीतर असाधारण कार्य हुआ और अंत में सी-डैक ने अपना काम प्रस्तावित समय सीमा के भीतर अच्छी तरह से किया। वैज्ञानिकों के माथे का पसीना रंग लाया तथा सी-डैक ने एक इतिहास रच दिया था। यह पहली बार था जब किसी विकासशील देश ने उन्नत कंप्यूटर तकनीक में ऐसा चमत्कार कर दिखाया हो। दुनिया इस उपलब्धि पर चकित थी। भारत द्वारा बनाया पहला स्वदेशी सुपर कंप्यूटर 'परम 8000' के नाम से जाना गया परम एक संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ है अति उन्नत परम के प्रदर्शन के बाद अमेरिकी अखबारों में विस्तार से छपा।

डॉ. विजय भाटकर ने सी-डैक में राष्ट्रीय परम सुपर कंप्यूटिंग सुविधा (MPSF) की शुरूआत की जो भारत में उच्च प्रदर्शन कंप्यूटिंग (एच.पी.सी.) के लिए कार्य करता है। वर्ष 1988 में स्थापना के उपरांत सी-डैक ने अन्य कई क्षेत्रों में कीर्तिमान स्थापित किए जिनमें से प्रमुख हैं:

- उच्च प्रदर्शन कंप्यूटिंग (एच.पी.सी.)
- बहुभाषी कंप्यूटिंग
- एम्बेडिड प्रणाली
- स्वास्थ्य सूचना प्रणाली
- बी.ओ.एस.एस. (बॉस) भारत ऑपरेटिंग सिस्टम
- शिक्षा एवं प्रशिक्षण
- साइबर सुरक्षा

इसके साथ ही सी-डैक ने भारत की महान विरासत को सहेजने के लिए कई प्रणाली तैयार की हैं जिनका उद्देश्य पुराने अभिलेखों का संरक्षण एवं रख-रखाव है। सी-डैक ने पिछले कुछ वर्षों में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बनाई है तथा बहुत सारे पुरस्कार भी प्राप्त किए हैं जिनमें प्रमुख हैं, स्कॉच पुरस्कार, मंथन पुरस्कार, राज्य सरकारों द्वारा दिए जाने वाले ई-गवर्नेंस पुरस्कार। निकटतम भविष्य में सी-डैक और नए कीर्तिमान स्थापित करेगा तथा भारत के जन-मानस की सुविधाओं एवं समस्याओं के लिए नई प्रणाली विकसित करेगा।

जानकारीः सी-डैक डॉट इन, विकिपीडिया

◆◆◆

बुराई से छुटकारा पाना

उत्तम कुमार
प्रशासन

प्रत्येक मनुष्य के तन-मन में ईश्वर ने एक ऐसी शक्ति दी है कि वह प्रत्येक बुराई से छुटकारा पा सकता है। बुराई से लड़कर इसे परास्त किया जा सकता है। आपने स्वयं देखा होगा कुछ लोग एकाएक सिगरेट शराब को एक झटके में छोड़ देते हैं। इसका कारण उनकी दृढ़ इच्छा शक्ति होती है।

बुराइयां हमेशा हमारी सफलता में बाधक बनती हैं। यह भी निश्चित बात है कि प्रत्येक मनुष्य में कुछ न कुछ अवगुण अवश्य रहता है। इस कारण प्रत्येक मनुष्य अगर अपने जीवन में सफलता पाना चाहता है तो अपनी इस बुराई पर काबू पाना होगा, जब तक हम अपनी कमजोरियां दूर नहीं करेंगे, तब तक हमारा कार्य रूका रहेगा। ऐसा भी होता है कि अपनी इस कमजोरी या बुराई के कारण मनुष्य जीवन में असफल रह जाता है।

लेकिन वास्तव में बुराई है क्या। बुराइयां हमारी इन्द्रियों की दुर्बलता के कारण उत्पन्न होती हैं जब किसी इन्द्रिय पर वश नहीं रह जाता तो हम इसके गुलाम बन जाते हैं। इससे छुटकारा पाने का एक- मात्र उपाय है कि हम अपनी इन्द्रियों को वश में रखें। बुराई अपने आप दूर हो जाएगी। हमने बुरा काम कर लिया तो हम इस बात का प्रयत्न करें, और ऐसी अवस्था सोचें कि दोबारा वह हमसे न होने पाए, इस बात की कोशिश हमेशा करनी चाहिए।

अपने आप पर विश्वास रखें, अपनी शक्तियों पर भरोसा रखें, याद रहे कि हमारे भीतर वह शक्ति है जो एक बार जागने पर मनुष्य को न केवल ईमानदार, मेहनती एवं सफल और आगे बढ़ने का विश्वास जगाती है।

◆◆◆

सी-डैक, नोएडा पुस्तकालय

- नीरू शर्मा
पुस्तकालयाध्यक्ष

पुस्तकों के पढ़ने से मनुष्य के आंतरिक गुणों का ही विकास नहीं होता अपितु वह सुसंस्कृत एवं संयत भी बनता है। आज के युग में भले ही कंप्यूटर, चलचित्र, सी.डी., दृश्यश्रव्य अध्ययन-अध्यापन का प्रचलन बढ़ा है, परंतु शिक्षा को आत्मसात एवं ग्राह्य बनाने की जो क्षमता पुस्तकों में है, वह कहीं और नहीं। दूसरे शब्दों में पुस्तकालय शिक्षा की आराधना का वह मंदिर है, जहां साधक छात्र हमेशा शीश नवाता है। निःसंदेह उत्कृष्ट ज्ञान के बिना हम अधूरे हैं और वह हमें पुस्तकों से ही प्राप्त होता है। पढ़ने-लिखने की आदत इंसान को दूसरों से अलग प्रदर्शन करने की प्रेरणा देती है, और उसका अधूरापन दूर करती है।

इसी उत्कृष्ट परंपरा का निर्वहन करते हुए सी-डैक, नोएडा पुस्तकालय भी अनुसंधान कर रहे छात्रों एवं कर्मचारियों की सेवा करने में एक महत्वपूर्ण तथा सक्रिय भूमिका निभाता है। पुस्तकालय सूचना प्रौद्योगिकी, इलेक्ट्रॉनिक्स, प्रबंधन जैस अनेक विषयों पर किताबों, पत्रिकाओं, ऑनलाइन डेटाबेस, सी.डी. रोम तथा परियोजना रिपोर्टों आदि आधुनिक सुविधाओं और संसाधनों से सुसज्जित है।

यह पुस्तकालय 580.65 वर्ग मीटर के क्षेत्र में फैला है। यहां पर पाठ्य पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, संदर्भ वर्ग, बुक बैंक, ई-लाइब्रेरी, सर्कुलेशन विभाग है, साथ ही शिक्षकों, रिसर्च फैलो और संकाय सदस्यों के बैठने हेतु अलग स्थान की व्यवस्था भी है।

सी-डैक, नोएडा पुस्तकालय द्वारा प्रदान की जाने वाली प्रमुख सेवाएं आगे दर्शाई गई हैं:

1. पुस्तक वर्गीकरण एवं कैटलॉगिंग - सी-डैक, नोएडा के पुस्तकालय में पुस्तकों का वर्गीकरण करके Dewey Decimal Classification System के अनुसार शेल्फों में व्यवस्थित किया गया है ताकि सदस्यों को पुस्तकों को ढूंढने में परेशानी न हो। पुस्तकों की AACR2 के अनुसार कैटेलॉगिंग की गई है। इससे एक ही किताब का एक ही रिकॉर्ड रहता है तथा सदस्यों को उसकी सब कॉपियों की सूची एक ही जगह कंप्यूटर में दिख जाती है। हमारी लाइब्रेरी से ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस कैटेलॉग (OPAC) की सेवा की सुविधा प्रदान की गई है।

2. सर्कुलेशन सेवा - पुस्तकालय द्वारा जारी किए गए पुस्तकालय कार्ड पर पुस्तकें निर्गत की जाती है। सी-डैक, नोएडा के शिक्षक, छात्र, कर्मचारी तथा अधिकारी पुस्तकालय के सदस्य बनकर पुस्तकें अपने नाम पर इश्यू करा सकते हैं। पुस्तकें 15 दिन तक के लिए इश्यू की जाती हैं। छात्रों तथा शिक्षकों को पुस्तकें 6 महीने के लिए भी इश्यू की जाती हैं। पुस्तकालय KOHA लाइब्रेरी सॉफ्टवेयर इस्तेमाल करता है।

3. प्रश्न-बैंक - पुस्तकालय में पुस्तक तथा डिजिटल स्वरूप में एम.सी.ए., एम.टैक और एम.बी.ए. पाठ्यक्रम के पुराने प्रश्न-पत्रों का प्रश्न-बैंक है, ताकि छात्र परीक्षाओं के लिए संदर्भ लेकर अच्छी तैयारी कर सकें।

4. आरक्षण सेवा - सदस्य, संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर किसी भी पुस्तक को ऑनलाइन आरक्षित कर सकते हैं। इस तरह की पुस्तकें उनके लौटने पर बुकिंग क्रम के अनुसार सदस्यों को इश्यू की जाती हैं।

5. ई-लाइब्रेरी - सी-डैक, एस.सी.आई.टी. संघ का एक सदस्य है। इसके द्वारा वह सदस्यों को IEEE/IEL पत्रिकाओं में ACN तथा Books 24X7 के माध्यम से डिजिटल पुस्तकालय तथा ई-पुस्तकें उपलब्ध कराता है। उपयोगकर्ताओं की जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त कंप्यूटिंग सुविधाएं मौजूद हैं। 10 thin clients पुस्तकालय सदस्यों के इस्तेमाल के लिए प्रदान किए गए हैं। सदस्य इस पर ऑनलाइन IEEE, ACM, e-books वगैरह देख सकते हैं। पढ़ने के क्षेत्र में wi-fi की सुविधा, प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों तक सहज पहुंच के लिए अपने लैपटॉप को लाने की भी अनुमति है।

6. उपयोगकर्ता जागरूकता कार्यक्रम - पुस्तकालय शैक्षणिक वर्ष की शुरूआत में नए छात्रों के लाभ हेतु तथा उन्हें उपलब्ध सेवा तथा संसाधनों से परिचित करने के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करता है। इसके लिए छात्रों को पुस्तकालय में लाया जाता है तथा विभिन्न क्षेत्रों के बारे में जानकारी दी जाती है।

7. समाचार पत्र ई-क्लिपिंग - शिक्षण संबंधित मामलों, रोजगार के अवसर, प्रौद्योगिकी के विज्ञापन आदि की डिजिटल स्वरूप के द्वारा सभी सदस्यों को जानकारी दी जाती है।

8. पुस्तकों तथा पत्रिकाओं का संग्रह - सी-डैक, नोएडा पुस्तकालय पुस्तकों, संदर्भ पुस्तकों, पत्रिकाओं और इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों के अपने संग्रह को तेजी से विकसित कर रहा है। प्रतिवर्ष छात्रों के उपयोग के लिए विभिन्न पुस्तकें, पत्रिकाएं, समाचार पत्र आदि मंगाए जाते हैं। पुस्तकालय में प्रतिवर्ष हिन्दी तथा अंग्रेज़ी भाषा के साहित्य भी मंगाए जाते हैं। इन सबके लिए समय-समय पर पुस्तकालय द्वारा विभिन्न प्रकाशकों की पुस्तकों की प्रदर्शनियां लगाई जाती हैं।

9. ऑन-लाइन कैटलॉग - पुस्तकालय द्वारा web opac की सेवा भी प्रदान की जाती है। इसमें सदस्य पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों तथा उनके खाते में इश्यू की गई पुस्तकों तथा अन्य सेवाओं की जानकारी भी ले सकते हैं।

10. परियोजना रिपोर्ट - छात्रों द्वारा बनाई गई तथा प्रस्तुत की गई प्रोजेक्ट रिपोर्ट की डिजिटल कॉपियां भी अन्य छात्रों के संदर्भ के लिए ऑनलाइन उपलब्ध कराई गई है। छात्र अपने विषय से संबंधित प्रोजेक्ट रिपोर्ट को लाइब्रेरी में रखे गए कंप्यूटर पर देख सकते हैं।

11. नया संग्रह - पुस्तकालय द्वारा समय-समय पर खरीदी गई पुस्तकों तथा पत्रिकाओं की जानकारी सभी सदस्यों को प्रदान की जाती है। पुस्तकालय में हिन्दी की नवीनतम पुस्तकों का भी अच्छा संग्रह मौजूद है।

सी-डैक, नोएडा पुस्तकालय का लक्ष्य अधिग्रहण, संगठन और ज्ञान-संसाधनों के प्रचार-प्रचार के माध्यम से नए ज्ञान के सृजन और मूल्यवर्धित सेवाओं के लिए सुविधा प्रदान करना है और इस दिशा में यह निरंतर अग्रसर है।

किताबें ऐसी शिक्षक हैं जो बिना कष्ट दिए, बिना आलोचना किए एवं बिना परीक्षा लिए हमें शिक्षा देती हैं।

◆◆◆

नैनो टेक्नॉलॉजी

अमिय मोहंती
परियोजना अभियंता

किसी भी पदार्थ को परमाणविक पैमाने पर नियंत्रित ढंग से जोड़-तोड़ कर अपनी इच्छानुसार नए रूप में परिवर्तित कर लेने की विधा का नाम नैनोटेक्नॉलॉजी है। लगभग चालीस साल पहले रिचर्ड फिनमैन ने इस अवधारणा का सुझाव दिया था और 1974 में नॉरियो तानीगूची ने इसका नामकरण किया।

इस ब्रह्माण्ड में पाई जाने वाली सभी वस्तुओं की संरचना के मूल में परमाणु हैं या फिर थोड़े से जटिल रूप में इन परमाणुओं से निर्मित अणु हैं। किसी भी वस्तु का गुण उसकी संरचना में प्रयुक्त परमाणुओं एवं अणुओं के विन्यास पर निर्भर करता है। किसी भी वस्तु के अणुओं एवं परमाणुओं को पुनर्व्यवस्थित कर इसे दूसरी वस्तु में आसानी से बदला जा सकता है। कोयले की संरचना में प्रयुक्त कार्बन के परमाणुओं को पुनर्व्यवस्थित कर हीरे में बदला जा सकता है या फिर बालू के परमाणुओं को पुनर्व्यवस्थित कर और उसमें थोड़ी सी अशुद्धि मिलाकर कंप्यूटर चिप्स में बदला जा सकता है ।

इसे अच्छी तरह समझने के लिए सबसे पहले परमाणविक पैमाने 'नैनोमीटर' को जानना होगा। एक मीटर के अरबवें हिस्से को नैनोमीटर कहते हैं। यह कितना छोटा है इसका अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि हमारे एक बाल की मोटाई लगभग चालीस हजार नैनोमीटर होती है या फिर एक नैनोमीटर में 3-5 परमाणु समा सकते हैं।

ऐसे अतिसूक्ष्म नैनोटेक्नॉलॉजी के विकास की प्रेरणा वैज्ञानिकों को संभवतः प्रकृति से ही मिली है। एक जैविक कोशिका के निर्माण, वृद्धि तथा वर्किंग में मूल रूप से डीएनए एवं आरएनए जैसे प्राकृतिक नैनोअसेंबलर्स की ही मुख्य भूमिका है। इनका आकार कुछ ही नैनोमीटर होता है परंतु ये कोशिका की संरचना तथा विभिन्न जैव-रासायनिक प्रक्रियाओं को संचालित करने वाले जटिल से जटिल प्रोटीन का निर्माण कोशिका के साइटोप्लाज्म में मौजूद एमीनो एसिड्स द्वारा करने की क्षमता रखते हैं। इस पूरी प्रक्रिया में डीएनए की मुख्य भूमिका होती है। डीएनए की विशेषता यह है कि न केवल ये अपनी प्रतिकृति स्वयं बना सकते हैं बल्कि प्रोटीन निर्माण में असेंबलर्स एवं असेंबली-साइट का कार्य करने वाले राइबोसोमल, ट्रांसफर तथा मैसेंजर आरएनए का निर्माण भी करने की क्षमता रखते हैं।

नासा के वैज्ञानिकों ने 1987 में सुपर कंप्यूटर द्वारा बेंज़ीन के अणुओं को कार्बन के परमाणुओं से बने किसी सामान्य अणु के आकार के अति सूक्ष्म नैनोट्यूब्स के बाहरी सतह पर जोड़कर आणविक- आकार के यंत्र निर्माण के मिथ्याभासी अनुरूपण (simulation) में सफलता का दावा किया था। ये यंत्र लेज़र द्वारा संचालित किए जा सकते हैं। भविष्य में इनका उपयोग 'मैटर कंपाइलर' जैसे अतिसूक्ष्म यंत्र के निर्माण में हो सकता है। इन मशीनों को कंप्यूटर द्वारा प्रोग्राम कर प्राकृतिक गैस जैसे कच्चे माल के परमाणुओं को एक-एक कर फिर से व्यवस्थित कर किसी बड़ी मशीन अथवा उसके किसी हिस्से को निर्मित किया जा सकता है।

कंप्यूटर हार्डवेयर के क्षेत्र में हो रही प्रगति की रफ्तार को बनाए रखने या फिर उससे भी आगे ले जाने के लिए वर्तमान समय की लीथोग्राफिक तकनीक से बनाए जाने वाले सिलिकॉन चिप्स की क्षमता अपनी पराकाष्ठा पर पहुँचने वाली है। नैनो टेक्नॉलॉजी की मदद से भविष्य में हम थोड़े से ही परमाणुओं का उपयोग कर नए प्रकार के परमाणविक लॉजिक एलीमेंट तथा गेट्स बना सकेंगे। इन परमाणविक गेट्स की मदद से ऐसे कंप्यूटर- उपकरण बना सकेंगे, जिनका आकार चीनी के क्यूब जैसा होगा परंतु स्टोरेज क्षमता करोड़ों बाइट्स होगी तथा ये कंप्यूटर्स प्रति मिनट करोड़ों कमांड दे सकेंगे।

चिकित्सा के क्षेत्र में नैनोटेक्नॉलॉजी का सर्वाधिक असर होगा। कैंसर कोशिकाओं या वायरस जनित असाध्य रोगों को ठीक करने के लिए रोगी को बस नैनोबॉट्स युक्त पेय की कुछ बूँदें लेनी होंगी। नैनोबॉट्स कैंसर कोशिकाओं एवं वायरस पर आक्रमण कर उनकी आणविक संरचना को बदल कर, उन्हें निष्प्रभावी कर देंगे। एक अन्य प्रकार के नैनोबॉट्स हमारे शरीर के वृद्ध होने की प्रक्रिया को रोक सकते हैं या उससे भी आगे बढ़कर विपरीत दिशा में मोड़कर हमें फिर से युवा बना सकते हैं। इनसे भी अलग एक दूसरे प्रकार के नैनोबॉट्स अर्थात् 'नैनोसर्जन' कठिन से कठिन एवं खतरनाक ऑपरेशन आज के उपकरणों की तुलना में हजार गुना अधिक सफाई तथा कुशलतापूर्वक कर सकते हैं और वह भी शरीर पर बिना किसी दाग-धब्बे के। यही नहीं, कोशिकाओं की वर्तमान आणविक संरचना को बदलकर आँख, नाक, कान या फिर पूरे शरीर की कायापलट के लिए भी इन्हें प्रोग्राम किया जा सकता है।

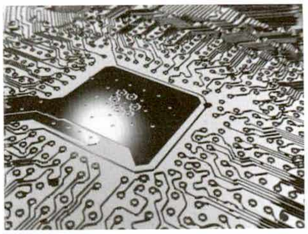

संभवतः इन नैनोमशीन्स की सहायता से हम और भी मजबूत फाइबर्स बना सकते हैं और बाद में तो हीरे से लेकर पानी या खाना कुछ भी बन सकता है, वह भी बड़े सस्ते में और आज की तुलना में थोड़े से कच्चे माल के साथ। इन नवनिर्मित सामानों की मजबूती तथा हल्कापन हमारी कल्पना से भी आगे होगा।

♦♦♦

नि: स्वार्थ जीवन

- दीपांकर गांगुली
एस.एन.एल.पी.

नि: स्वार्थ कार्य नि: स्वार्थ प्रेम की एक बाह्य अभिव्यक्ति है। दिल जब प्यार से भर जाता है तो यह अपने को निःस्वार्थ कार्रवाई के रूप में व्यक्त करता है। एक इसकी गहन भावना है और दूसरी इसकी अपनी बाह्य अभिव्यक्ति है। बिना गहरे निःस्वार्थ प्यार के नि: स्वार्थ कार्रवाई नहीं की जा सकती।

हमारी यात्रा की शुरुआत में, हमारा खुद का प्यार हमारे कार्यों में से प्रत्येक के लिए प्रेरणा शक्ति बन जाता है, यहां तक कि अगर हम उन्हें निस्वार्थ कहने के लिए चुनें। अहंकार के लिए प्यार, या अपने आपको, हर इंसान में प्रमुख रूप से महसूस किया जाता है। जब तक यह भावना समाप्त नहीं होती है, वास्तविक निस्वार्थता नहीं होगी।

एक बूढे आदमी द्वारा आम के पेड़ लगाने की एक कहानी है। जब उसके पड़ोसी ने देखा कि वह क्या कर रहा था, तो उसने कहा, **"**क्या आपको लगता है आप काफी लंबे समय रहते इन पेड़ों से आम का स्वाद लेने के लिए जीवित बचेंगे। नहीं, मुझे संदेह है,**"** बूढे आदमी ने कहा। **"**तो फिर तुम क्यों अपना समय बर्बाद कर रहे हो**?"** पड़ोसी से पूछा। बूढा आदमी मुस्कराया और बोला, **"**मेरी सारी ज़िंदगी दूसरों के द्वारा लगाए पेड़ों से आम खाने का आनंद लेने में बीती है। उन लोगों के लिए आभार व्यक्त करने का मेरा तरीका है, जिन्होंने पेड़ लगाए।

यदि आप अपने लक्ष्य के रूप में प्यार और निस्वार्थता चुनते हैं, तो आपको सतर्क रहने की जरूरत है। अपने मन को लगातार देखो, क्योंकि मन के बिना आप कुछ भी नहीं कर सकेंगे। मन आपको नि:स्वार्थ नहीं होने देना चाहता है। इसका एक मात्र लक्ष्य निःस्वार्थ के मार्ग से आपको वापस लाना है, क्योंकि मन महत्वाकांक्षी होता है। जब तक तुम मन में वास करोगे, तुम केवल स्वार्थी हो सकते हो। आपको निःस्वार्थ होने के लिए मन से मुक्त होना पड़ेगा।

('स्पीकिंग ट्री' से उद्धरण)

♦♦♦

इंटरनेट स्पीड धीमी क्यों

अमित कुमार
परियोजना अभियंता-II

अगर आपने घर में हाईस्पीड इंटरनेट का कनेक्शन लगा रखा है, लेकिन उसको रफ्तार धीमी है तो आपका परेशान होना स्वाभाविक है। विश्व के लगभग सभी लोग अपने घर में ऐसी समस्या से जूझते हैं। इसके लिए प्रायः ब्रॉडबैंड एक्सचेंज से यूजर्स की घर तक की दूरी को दोष दिया जाता है। किंतु इसके लिए अन्य कई कारण भी जिम्मेदार होते हैं। इसलिए यूजर्स कुछ उपयोगी तरीकों से इंटरनेट की रफ्तार को तेज कर सकते हैं और साथ ही इनके प्रयोग से कंप्यूटर की गति से संबंधित उन कारणों का भी समाधान हो जाता है।

1. आई.एस.पी. **(ISP)** का इस्तेमाल

यदि आपके इंटरनेट का कनेक्शन कम स्पीड देता है तो संभव है कि आपके आस-पास अन्य यूजर्स भी एक समान आई.एस.पी. का उपयोग कर रहे हैं। आप चाहे तो OOKLA का फ्री टूल के speedtesd.net के जरिए अपनी करंट डाउनलोड एवं अपलोड स्पीड को जान सकते हैं। यह टूल एंड्रायड आई.ओ.एस. एवं विंडोज मोबाइल एप के रूप में भी मिलता है और साथ ही वेबसाइट रुप में भी। यदि औसत रफ्तार चाहते हैं तो दिन में कई बार टेस्ट करें और एक बार परिणाम आने पर switch के street stats साइट पर जाएं तथा अपने क्षेत्र में हालिया स्पीड नापने के लिए अपना पोस्टकोड डालें। इससे आप जान पाएंगे कि आपकी नेट रफ्तार पड़ोसियों से बेहतर है या बदतर।

2. स्थानीय व्यवधान

हो सकता है कि पड़ोसियों को पावरफुल वाई-फाई सिग्नल आपके नेट की रफ्तार को कम कर रहे हों, क्योंकि जब एक ही क्षेत्र में, एक ही फ्रीक्वेंसी पर काफी सारे लोग एक समय वायरलेस चैनल का उपयोग करते हैं तो स्पीड पर अंतर पड़ना स्वाभाविक होता है। इसलिए अपने राउटर को 5GHZ बैंड पर स्विच करें जो 23 नॉन-ओवरलैपिंग चैनल्स प्रदान कर अन्य वायरलैस नेटवर्क से होने वाले व्यवधान को कम करता है। साथ ही चाहें तो कम व्यस्त चैनल ले सकते हैं तो इसका विकल्प एक छोटा फ्री टूल wifi Infectious रन करें options पर क्लिक करें channels mode को सेलेक्ट कर आसपास सक्रिय नेटवर्क्स से ब्रॉडकास्ट होते चैनल्स को जाएं। प्रायः 1, 6 तथा 11 चैनल्स का ज्यादा उपयोग होता है। यदि आपके पास इनमे से कोई हो और आप अन्य यूजर्स के साथ इन्हें शेयर कर रहे हैं तो बेहतर होगा कि राउटर सेटिंग्स बदलकर अन्य चैनल ले लें।

राउटर सेंटिंग बदलने के लिए अपने कंप्यूटर का ब्राउजर ओपन करें। आपके राउटर निर्माता द्वारा प्रदान URL पर जाएं, जो प्रायः (192.168.0.1) या (192.168.1.1) होता है। यूज़रनेम एवं पासवर्ड दोनो या तो admin होना चाहिए या बिना पासवर्ड होना चाहिए। एक बार पेज लोड होने पर wireless network settings पर क्लिक करें या अपेक्षित ऑप्शंस पाने के लिए इसके समान (Same as) सेटिंग्स को एक्सेस करे। कुछ गलत होने की संभावना हो तो Original Setting को सेव कर लें।

3. ब्लाटर्ड ब्राउजर

लेकिन पेज डाउनलोड करने में समय लेने के लिए केवल ISP को ही नहीं दोष दिया जा सकता। हो सकता है, आपका ब्राउजर इसके लिए दोषी हो। क्योंकि adblocks plus जैसे ऐड-आन्स तथा Flash जैसा plugin आदि भी इसका कारण हो सकता है। इसलिए यदि इनमें से किसी की जरूरत न हो तो उनको disable कर दे। क्रोम crom में Shift+Esc दबाकर टास्क मैनेजर ओपन करें, memory कालम पर क्लिक करें। ऊपर देखें तो समस्या के कारण संबंधी एंट्रीज दिखाई देंगी। जबकि फायरफॉक्स में ऐड्रेस बार में about:memory टाइप करें और enter दबाएं तो बैंकग्राउंड में चलने वाले एप का पता चल जाएगा। हालांकि संबंधित जानकारी क्रोम (Croam) के समान स्पष्ट नहीं होगी। इन विधियों से आप अनावश्यक टूल्स भी हटा सकते हैं।

4. घरेलू व्यवधान

समान्यतः घरेलू उपकरण भी वाई-फाई एवं नेट को धीमा करते है, क्योंकि उनसे उत्पन्न होने वाली इलेक्ट्रोमैग्नेटिक इंटरफेस एवं माइक्रोवेब, मॉनीटर्स सिक्योरिटी कैमरों आदि के वायरलैस सिग्नल सभी इसे प्रभावित करते हैं। ऐसे में राउटर को इन डिवाइसेस से दूर रखना चाहिए। यदि ऐसा करना संभव न हो तो वाई-फाई बैंड को 5GHZ पर बदल दे। कभी-कभी घर की दीवारें भी व्यवधान पैदा करती हैं। ऐसे में Wi-Fi Extender का उपयोग करें जिनमें Nedger TP-Link एवं Linkis.... आदि भरोसेमंद माने जाते हैं।

5. ट्रैफिक नियंत्रण

कंप्यूटर की भाषा में इसे बैंडविड्थ थ्रोटलिंग भी कहते हैं जो व्यस्त समय में या किसी अन्य ट्रैफिक के ऊपर से गुजरते हैं। किसी अन्य ट्रैफिक को प्राथमिकता के चलते आपके कनेक्शन को धीमा करके ISP को प्रभावी बनाता है। आई.एस.पी. नेट ट्रैफिक को नियंत्रित करता है। कुछ आई.एस.पी. समझते हैं कि ट्रैफिक को नियंत्रित कर उन थोड़े से कस्टमर्स को नियंत्रित करना सरल हो जाता हैं, जो निरंतर बड़ी फाइलों को डाउनलोड-अपलोड करते हैं, और मौजूदा बैंडबिड्थ को व्यस्त रखते हैं। क्योंकि एक ही समय पर हर नेट यूजर अधिकतम स्पीड पाना चाहता है, किंतु उनकी क्षमता सीमित होती है। वस्तुतः यदि आप 30MBPS या ज्यादा पैकेज लेते हैं और व्यस्त समय के दौरान आपकी डाटा सीमा निर्धारित से ज्यादा होती है तो वह सीमित हो जाएगी। यदि 20MBPS या कम स्तर पर दें तो सप्ताह के सातों दिनों के अधिकतम 5 घंटे के लिए डाउनलोड-अपलोड दोनों ही स्पीड एक-समान होगी। यदि आई.पी.एस.पी. द्वारा अपनी डाटा स्पीड को नियंत्रित करने से संतुष्ट हैं तो कम सीमाओं वाला एवं ज्यादा अपग्रेड पैकेज लें या फिर व्यस्त समय में बड़ी फाइलों को डाउनलोड करने का समय बदलें। यदि आपको आई.एस.पी. द्वारा बैडबिड्थ को शेप करने का संदेह है तो BIT Torrent जैसे फ्री टूल आपको आई.एस.पी. द्वारा सीमित किए जाने वाले एप्लीकेशंस पर नजर रखते हैं। किंतु आपको उसके लिए पुराने Java Plugin को आजमाना पड़ेगा।

♦♦♦

एक अपील

- शिव कुमार शर्मा
प्रशासन

मैं घर से सुबह लगभग आठ बजे ऑफिस पहुँचता हूँ। घर से ऑफिस लगभग 15 मिनट का सफर करने में मैं सड़कों पर जो दृश्य देखता हूँ, देख कर व्याकुल हो जाता हूँ और मन ही मन ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह सामने वाला अमुक व्यक्ति सुरक्षित नहीं जा रहा है, वहां पहुंच जाए और सोचता हूँ कि ऐसा क्या किया जाए जो सड़क पर चलने वाले लाखों लोगों को यह याद दिला सकूं कि आपका जीवन बहुत कीमती है, सुरक्षित चलें। वाहन चलाना एक ऐसा कार्य है कि अगर सावधानीपूर्वक वाहन नहीं चलाया गया तो एक व्यक्ति की गलती से दूसरे कई व्यक्तियों को जान-माल का नुकसान हो सकता है। मैं बहुत समय से देख रहा हूँ कि वाहन चलाते समय मोबाइल की बात-चीत या संगीत सुनने के लिए दोनों कानों में लीड लगाकर रोड पर पैदल चलते हैं। मोटर साइकिल, साइकिल यहां तक कि कार को चलाने वाले व्यक्ति भी ड्राइविंग करते समय दोनों कानों में मोबाइल की लीड लगा कर अपनी धुन में मस्त रहते हैं। अमुक व्यक्ति यह भूल जाता है कि हम सड़क पर चल रहे हैं। यह एक बेहद गंभीर विषय है। सड़क पर चलते समय यह व्यक्ति संगीत और बात-चीत के कारण यह भूल जाता है कि सड़क पर चल रहा हूँ, सड़क पार कर रहा हूँ। अक्सर ध्यान भटकने के कारण दुर्घटनाए हो जाती हैं।

सबसे बड़ी विडम्बना इस बात की है कि आज की युवा पीढ़ी शिक्षित होने के वाबजूद अपने और सड़क पर चलने वाले लोगों के जीवन के साथ खिलवाड़ कर रही है। यह एक बेहद गंभीर विषय है। इस विषय पर जागरूकता लाना बहुत जरूरी है। जो भी हमारे संपर्क में आता है, हम उनको इस विषय पर होने वाले नुकसान के बारे में बताते हैं। वह व्यक्ति हमारी बातों से सहमत हो जाता है, लेकिन मैं चाहता हूँ कि यह जागरूकता हम सभी को मिलकर फैलाने की जरूरत है ताकि लोगों का जीवन सुरक्षित हो सके।

♦♦♦

कंप्यूटर लर्निंग से होने वाले अद्भुद कार्य

- दीपांकर गांगुली
एस.एन.एल.पी.

कंप्यूटर लर्निंग के एल्गोरिदमस ने स्थिरतापूर्वक हमारी जिंदगी में सुधार किया है। इस लर्निंग से पुस्तकों, फ़िल्मों, रोजगार और घटनाओं को खोजने, हमारे निवेशों का प्रबंधन करने और नई औषधियों की खोज करने में काफी सुधार देखा गया है।

मशीन लर्निंग में तेजी से हुई प्रगति के साथ-साथ ये कई एल्गोरिदम केवल मूक कार्यक्रम ही नहीं हैं,बल्कि वे हमारे डिजिटल डाटा ट्रेल्स से सीख रहे हैं। मशीन लर्निंग स्टेराएड्स की वैज्ञानिक पद्धति खोज का वह स्वचालन है जिससे बुद्धिमान रोबोट और कंप्यूटर स्वयं प्रोग्रामिंग के सक्षम बनते हैं।

इस लेख को लिखने की प्रेरणा एक घटना से मिली। एक दिन मेरे एंड्रायड फोन पर अपने आप सूचना आई कि मैं अब से 20 मिनट में घर पहुंच जाऊंगा। हैरानी की बात यह थी कि यह सूचना मेरे प्रतिदिन इस समय एक गंतव्य स्थान से लौटने की प्रक्रिया से अनुमानित थी जोकि (google now) द्वारा अपने आप ट्रैफिक की जांच के पश्चात परिकलन करके मुझे दी गई थी। अद्भुत होने के साथ-साथ यह विचित्र भी है। अनुसंधानकर्ताओं के अनुसार मशीन लर्निंग हर क्षेत्र के लिए भी नई अवसंरचना बनती जा रही है।

निम्नलिखित नौ तरीके विज्ञान और विशेषकर मशीन लर्निंग के तरीके आपके जीवन को बेहतर बना रहे हैं।

स्वास्थ्य की देखभाल में मशीन लर्निंग

टोरंटो विश्वविद्यालय ने बताया कि कैंसर के उपचार के लिए बेहतर तरीका खोजने के लिए वे मशीन लर्निंग से मशीनों का प्रयोग कर रहे हैं। 'बेसियन माडलों' और 'डिसिज़न ट्रीज' का प्रयोग कर वे मॉडलों की बहुलता के उपायों से विशेष सेलों में स्थानांतरित कर सकते हैं। कैंसर के शोध के लिए नए उपकरणों का पता लगाने हेतु एक वैश्विक क्राउडसोर्स प्रतियोगिता उभर रही है। प्रतियोगी एक बहुत बड़े डी.एन.ए. अनुक्रम के डेटा का विश्लेषण करेंगे जिससे उन ट्यूमरों में आनुवंशिक पृथक गुपों की पहचान हो सके जोकि अक्सर चिकित्सा के निष्फल होने का कारण बनते हैं। लोआन्निना विश्वविद्यालय,ग्रीस के एक दल ने कैंसर मरीजों को उच्च एवं कम जोखिम ग्रुपों में विश्लेषित करने और मॉडल उपचार एवं परिणामों में मशीन लर्निंग का उपयोग किया है।

मशीन आपकी वार्डरोब का चयन करती है

स्टिच फिक्स में एक प्रमुख एल्गोरिदम अधिकारी ने ओ रियली डाटा शो के बेन लोरिका से कहा कि वे महिला वार्डरोब के आइटमों की सिफारिश करने के लिए मानव अंतर्ज्ञान और मशीन लर्निंग को संयुक्त करते हैं।

ग्राफ डाटाबेस सुरक्षित नेटवर्क और धोखाघड़ी का पता लगानाः

भंडारण, प्रबंध, प्रेक्षण और विश्लेषण करने के लिए बड़े पैमाने पर रेखांकन हेतु कई दिलचस्प उपकरण नव प्रौद्योगिकी द्वारा इस्तेमाल किए गए हैं। इन एप्लीकेशन में शामिल हैं सिफारिशों, धोखाधड़ी का पता लगाना और सुरक्षा। उल्लेख किया गया है कि पारंपरिक साइबर सुरक्षा अनुप्रयोग नियम, हस्ताक्षर, और तय एल्गोरिदम पर बने हैं, और उनमें भरे गए 'ज्ञान' के आधार पर ही वे कार्य कर सकते हैं। लेकिन मशीन लर्निंग अनुप्रयोग "लर्निंग" एल्गोरिदम है, जो लगातार बढ़ रहे डेटा सेट की जांच कर रहे हैं।

स्मार्ट सिस्टम आपके चेहरे की पहचान

फेसबुक के बारे में कहा गया है कि वे चेहरे की विशेषताओं पर आधारित टेम्पलेट गणना करने के लिए एक एल्गोरिदम का उपयोग करते हैं,इसी तरह मानव मस्तिष्क एक चेहरे का पता लगाता है और इसे पहचानता है। इसका मतलब है कि हम उपकरणों को देखने के लिए मानव मस्तिष्क की नकल करने में सक्षम हो सकेंगे।

डीप लर्निंग एल्गोरिदम समस्याओं की भविष्यवाणी

डीप लर्निंग एक तेजी से बढ़ती शाखा है जो कि जटिल बहुपरती नेटवर्क के रूप में डेटा में उच्च स्तर के पैटर्न का मॉडल है। इसके अलावा दोहराव की समस्याओं को हल करने के साथ-साथ भाषण पहचान, छवि पहचान, 3-डी वस्तु पहचान, और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण, डीप लर्निंग की समस्याओं की भविष्यवाणी कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, डीप लर्निंग भुगतान प्रणाली प्रदाताओं में संदिग्ध लेनदेन की पहचान कर सकती है, डेटा केंद्रों और कंप्यूटर नेटवर्क में संभावित खतरों, माइन संवेदक डेटा के आधार पर मोटर वाहनों में संभव भाग विफलता,और उत्पादन एवं वितरण बाधाओं का प्रावधान करती है।

स्मार्ट मशीनें आपके हवाई जहाज और मार्ग को चुनती है

स्मार्ट एयरलाइंस एल्गोरिदम का उपयोग मार्गों को चुनने एवं ग्राहक निष्ठा बनाने के लिए कर रही हैं। साउथ वेस्ट एयरलाइंस और अलास्का एयरलाइंस शीर्ष कंपनियां हैं, जिन्होंने डेटा साइंस को अपने काम करने के तरीकों में आने वाले परिवर्तनों के लिए स्थान दिया है।

डिलीवरी मदों को कम करना

मालवाहक कंपनियां जैसे डी.एच.एल.,फेडेक्स और यू.पी.एस. ने अपनी संचालन कार्यक्षमता को बढ़ाने के लिए डाटा साइंस का उपयोग किया है। डाटा साइंस का प्रयोग करके, इन कंपनियों द्वारा लागत क्षमता की ओर उन्मुख जहाजों के लिए सर्वोत्तम मार्ग, सर्वोपयुक्त प्रदायी समय,यातायात की सर्वोत्तम विधा का चयन आदि अनगिनत कार्य किए गए हैं। स्थापित जी.पी.एस. का प्रयोग करके ये कंपनियां जो डाटा उत्पादित करती हैं उन पर उन्हें डाटा साइंस प्रयोग करके संभावनाओं का पता लगाने में बहुत अधिक मदद मिलती है।

मशीन चैम्पियन गो प्लेयर को पछाड़ देती है

19X19 का एक बोर्ड जोकि प्राचीन चीनियों द्वारा युद्ध की नीतियों की योजना बनाने के लिए प्रयोग किया जाता था, यह गेम शतरंज से भी अधिक कठिन गेम था। परन्तु गूगल डीप माइंड का स्मार्ट एल्गोरिदम अब चैम्पियन गो प्लेयर को हरा चुका है। मशीन लर्निंग अब धीरे-धीरे हेल्थकेयर और बीमा, खोज एवं विज्ञापन, खरीददारी तथा मूल्य-तुलना और हर उस क्षेत्र को जहां से डाटा जेनरेट किए जाते हैं, नया आकार दे रही है।

हाल ही में की गई प्रगति दर्शाती है कि शिक्षणकर्ताओं को मशीन लर्निंग के अनुप्रयोगों और अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाले प्रभावों से सुविज्ञ होना चाहिए। युवाओं को अपनी रुचि के क्षेत्र में डाटा साइंस अनुप्रयोग के कम से कम सम्प्रेषण योग्य ज्ञान का अपने अंदर विकास करना चाहिए। कोडिंग के प्रारंभिक ज्ञान से भी युवाओं को अनुप्रयोगों के विकास की जानकारी मिलेगी, साथ ही वे यह जान सकेंगे कि डाटा को कैसे ग्रहण और संचालित किया जाता है।

('टॉकिंग माइंड्स' से साभार)

◆◆◆

सूचना सुरक्षा शिक्षा एवं जागरूकता

- नेहा बाजपेयी

आज के समय जितना फोन, इंटरनेट आदि का उपयोग बढ़ रहा है, उसको देखते हुए साइबर सुरक्षा और सूचना सुरक्षा प्रदान करने के लिए भारत सरकार ने सूचना सुरक्षा शिक्षा एवं जागरूकता शुरू करने की योजना बनाई। भारत सरकार (इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना सुरक्षा विभाग) ने सूचना सुरक्षा शिक्षा एवं जागरूकता-द्वितीय के कार्यक्रम का शुभारंभ किया। यह परियोजना वर्ष,2005 में मंजूर की गई थी। सूचना सुरक्षा शिक्षा एवं जागरूकता के माध्यम से 2015 में इस परियोजना का सफलतापूर्वक समापन हुआ। इसकी सफलता और उपलब्धियों को देखते हुए इसका दूसरा चरण अप्रैल,2015 में शुरू किया गया।

सूचना सुरक्षा शिक्षा एवं जागरूकता में निम्न अध्ययन कराए जाते हैं:

- सरकारी अधिकारी, पेशेवर अधिकारी, तकनीकी छात्र, स्कूल के छात्र आदि के लिए आधे एवं 1 दिन का पूर्ण-दिवसीय जागरूकता प्रशिक्षण,
- सरकारी अधिकारियों को प्रशिक्षण,
- देश में सूचना सुरक्षा की जागरूकता फैलाना,
- शिक्षा व्यवस्था को बदलना।

सूचना सुरक्षा शिक्षा एवं जागरूकता के अंतर्गत 4 जुलाई, 2016 से 3 स्तर के सर्टिफिकेशन शुरू किए, जिसमें अभी तक सिर्फ एक चरण शुरू किया गया है, जैसे स्तर एक, स्तर दो, स्तर तीन। प्रत्येक स्तर पर प्रमाणपत्र प्रदान किए जाते हैं। इसमें बारहवीं कक्षा के बाद कोई भी छात्र/प्रतिभागी भाग ले सकते हैं एवं कार्यकारी प्रबंधक और जो लोग अपनी औपचारिक शिक्षा कर चुके हैं वे इसमें शामिल होकर डिप्लोमा/प्रमाणपत्र से प्रशिक्षित हो सकते हैं।

सूचना सुरक्षा शिक्षा एवं जागरूकता परियोजना मुख्य रूप से भारत सरकार के मानव संसाधन विकास के लिए लक्षित है, जो विभिन्न स्तर पर आयोजित है। इसकी परीक्षा साल में चार बार अर्थात् अगस्त, नवंबर, फरवरी, और मई के आखिरी शनिवार को होती है तथा इसका शुल्क 2 साल तक वैध रहता है। अपनी सुविधा के अनुसार प्रतिभागी इस परीक्षा में शामिल हो सकते हैं। इसमें प्रतिभागी चारों मॉडयूल की एक साथ, एक-एक करके, एक साथ दो अथवा तीन परीक्षा दे सकते हैं। चारों परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने पर उन्हें व्यावसायिक प्रमाणीकरण स्तर मिलेगा, और प्रत्येक परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर प्रतिभागी को प्रशिक्षण प्रमाणीकरण मिलेगा। इस सूचना सुरक्षा शिक्षा से प्रतिभागी अपने आपको सुरक्षित रख सकता है और सुरक्षा की अधिक जानकारी प्राप्त कर सकता है।

प्रगत संगणन विकास केन्द्र (सी-डैक), नोएडा द्वारा अब तक सूचना सुरक्षा के बहुत कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं, जिसमें विभिन्न प्रकार के प्रतिभागियों ने जागरूकता एवं जानकारी प्राप्त की है। सी-डैक, नोएडा अभी तक 662 सरकारी अधिकारी, 566 विद्यालय के छात्र एवं शिक्षक, 970 तकनीकी छात्र और 58 अन्य लोगों को प्रशिक्षित कर चुका है।

♦♦♦

क्या है जी.पी.एस.?

अमिय मोहंती
परियोजना अभियंता

ग्लोबल पॉजिशनिंग प्रणाली या जीपीएस एक वैश्विक पथप्रदर्शक उपग्रह प्रणाली होती है। इसका विकास संयुक्त राज्य अमेरिका के रक्षा विभाग ने किया है। 27 अप्रैल, 1995 से इस प्रणाली ने पूरी तरह से काम करना शुरू कर दिया था। वर्तमान समय में जी.पी.एस का प्रयोग बड़े पैमाने पर होने लगा है। इस प्रणाली का प्रयोग नक्शा बनाने, जमीन का सर्वेक्षण करने, वाणिज्यिक कार्य, वैज्ञानिक प्रयोग, सर्विलैंस और ट्रेकिंग करने तथा जियोकैचिंग के लिए भी होता है।

यदि आपका मोबाइल उपकरण गायब हो जाता है और अगर आपका मोबाइल जी.पी.एस. के सर्वर के साथ जुड़ा हुआ है तो आपको आपके मोबाइल का वास्तविक स्थान पता चल सकता है और आप जी.पी.एस. के सर्वर से मोबाइल के डाटा को लॉक या डिलीट भी कर सकते है।

टैक्सी या कैब में कितना कारगर

टैक्सी और कैब में जीपीएस लगे होने से कंपनी अपने वाहन को किसी भी समय ट्रैक कर सकती है। अगर किसी भी समय वाहन खराब हो जाए, तो वह मदद पहुंचा सकती है। वह कंट्रोल रूम से इस बात की तस्दीक कर सकती है, कि वाहन तय रास्ते पर ही आगे बढ़ रहा है या ड्राइवर किसी अन्य जगह वाहन लेकर जा रहा है। ऐसे ही किसी अप्रिय घटना या वारदात के समय वाहन को ढूंढा जा सकता है।

कैसे करता है काम

जीपीएस उपकरण एक सिम के जरिए सेटेलाइट से जुड़ा रहता है। इसके जरिए वह संदेशों का आदान-प्रदान करता है। जीपीएस तीन प्रमुख क्षेत्रों से मिलकर बना हुआ है, स्पेस सेगमेंट, कंट्रोल सेगमेंट और यूजर सेगमेंट। जीपीएस सीधे उपग्रह से जुड़ा होता है। जो वास्तविक जगह की पहचान करता है। इसके जरिए दूर कहीं बैठकर अपने वाहन की स्थिति को जाना जा सकता है। तीसरा सबसे महत्वपूर्ण है, जीपीएस के जरिए अपनी वास्तविक स्थिति पर तुरंत मदद पाना। अब जीपीएस से लगभग हर मोबाइल लैस है, जिसकी मदद से लोग अपने गंतव्य तक पहुंच पाते हैं।

धरती की सारी जगह को तीन निर्देशांकों से पहचाना जा सकता है। जैसा कि हम नक्शों में देखते हैं कि धरती के हर बिन्दु को हम अक्षांश और देशांतर रेखा की मदद से चिन्हित कर सकते हैं। धरती से उपर की चीजों के लिये ऊंचाई तीसरा निर्देशांक हो जाता है। इस प्रकार हर बिन्दु अक्षांश, देशांतर और ऊंचाई इन तीन निर्देशांकों की सहायता से चिन्हित किया जा सकता है। जी.पी.एस. सिस्टम भी इसी प्रकार धरती के सभी स्थानों को तीन निर्देशांकों की सहायता से चिन्हित करता है, जिसे कि जी.पी.एस. को-ऑर्डिनेट (निर्देशांक) कहते हैं।

जब हम जी.पी.एस. के बारे में बात करते हैं तो वास्तव में हम जी.पी.एस. रिसीवर के बारे में बात कर रहे होते हैं। जी.पी.एस. वास्तव में 27 कृत्रिम उपग्रहों (24 काम करते रहते हैं और 3 किसी के खराब होने पर काम करते हैं) का एक समूह है जिसे यू.एस. आर्मी ने अपने लिए बनाया था मगर बाद में सबके प्रयोग के लिए उपलब्ध कराया गया। ये सारे कृत्रिम उपग्रह धरती से 12552 मील की उंचाई पर चक्कर लगाते हैं और ये एक दिन में दो चक्कर लगा लेते हैं। ये सारे कृत्रिम उपग्रह इस प्रकार से व्यवस्थित होते हैं कि किसी भी समय धरती पर कहीं से भी कम से कम चार उपग्रह दिखाई देते रहें। जी.पी.एस. के काम करने का तरीका गणित के एक सिद्धांत पर काम करता है जिसे कि निर्देशांक ज्यामितीय (नक्शा बनाने की विधि) कहते हैं। यह दो आयाम (2D), तीन आयाम (3D) में काम करता है।

दो और तीन आयाम ज्यामिती

मान लीजिए आप भारत में किसी स्थान पर हैं और आपको बिल्कुल अन्दाजा नही हैं कि आप कहाँ हैं। ऐसे में आपको अपने किसी दोस्त से पता चले कि आप स्थान-1 से 650 किमी की दूरी पर हैं और स्थान-2 से 500 किमी की दूरी पर हैं। पहली सूचना से आपको ये पता चलता है कि आप स्थान-1 को केन्द्र मान कर खींचे गये वृत्त पर कहीं हैं। दूसरी सूचना से आपको एक और वृत्त मिल जाएगा। दोनो वृत्त एक दूसरे को दो जगहों पर काटते हैं। अब आपके होने की सम्भावना इन दो जगहों पर सिमट जाती है।

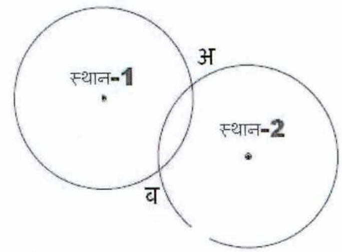

इसी प्रकार यदि आपको किसी तीसरे स्थान से आपकी स्थिति पता चल जाए तो आपको तीन वृत्त मिल जाएंगे। यदि आपको पता चला कि स्थान-3 से आपकी दूरी 600 किमी है तो आपके पास तीन वृत्त हो जाएंगे। ये तीनो वृत्त एक दूसरे को एक ही बिन्दु पर काटेंगे जो कि आपकी स्थिति होगी। इस प्रकार अगर किसी विधा से आप ये पता कर सकें कि तीन पहचान चिन्हों से आपकी दूरी क्या है तो आप ज्यामितीय विधि से अपना एक निश्चित स्थान पता कर सकते हैं।

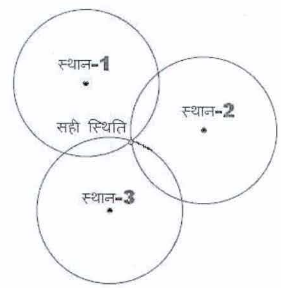

जी.पी.एस. भी कुछ इसी सिद्धांत पर काम करता है। जी.पी.एस. को गणना करने के लिए दो चीजों की आवश्यकता होती है।

1. कम से कम तीन उपग्रहों की स्थिति।
2. तीनो उपग्रहों से आपकी दूरी।

जी.पी.एस. इन दोनों की सहायता से गणना करके धरती के उस स्थान का कोआर्डिनेट बता देता है, जहाँ आप हैं। अगर आप हवा में है तो धरती का गोला काम नही आता है इसलिए चौथे उपग्रह की जरूरत पड़ती है। इस प्रकार चार उपग्रहों की सहायता से आप कहीं का भी जी.पी.एस. निर्देशांक बता सकते हैं।

◆◆◆

गूगल की सर्च हिस्ट्री ऐसे करें डिलीट

बालासुब्रमनियम एम.
तकनीकी अधिकारी

आप ऑनलाइन जो सर्च करते हैं, वह गूगल में सेव होता है। ऐसे में अगर आपकी सर्च हिस्ट्री गलती से किसी और के हाथ में लग जाए तो लेने के देने पड़ सकते हैं। इसके लिए आपको अपनी सर्च हिस्ट्री समय-समय पर डिलीट कर लेनी चाहिए।

1. विभिन्न सर्च इंजन आपकी सर्च हिस्ट्री एक लिमिटेड पीरियड के लिए सेव करके रख सकते हैं। जैसे गूगल आपकी हिस्ट्री 9 महीने तक सेव करके रखता है और यह पॉलिसी वेब और मोबाइल दोनो पर काम करती है। वहीं माइक्रोसॉफ्ट का बिंग आपकी सर्च हिस्ट्री को 18 महीने तक सेव रखता है।

2. विकीपीडिया के अनुसार गूगल पर प्रतिदिन 300 करोड़ से ज्यादा सर्च होता है।

   आज के समय में यूज़र्स पीसी से ज्यादा मोबाइल पर सर्च करते हैं। अगर आप सर्च हिस्ट्री डिलीट नहीं करते तो गूगल आपकी सर्च हिस्ट्री का प्रोफाइल बना लेता है और एक ही आई.पी. (IP) एड्रेस से विभिन्न सर्च की जाती हैं तो उस पैटर्न को देखकर व्यक्ति के बारे में आसानी से पता लगाया जा सकता है।

कैसे करें सर्च हिस्ट्री डिलीट

1. सर्च हिस्ट्री डिलीट करने के लिए गूगल को लॉग-इन करें।
2. अब नीचे की ओर दिखने वाले हिस्ट्री विकल्प पर क्लिक करें।
3. फिर जैसे ही आप हिस्ट्री ऑप्शन पर क्लिक करेंगे, वैसे ही प्रत्येक दिन की आपकी सर्च हिस्ट्री दिखने लगेगी।
4. अब अपने किसी भी दिन की हिस्ट्री के सामने बने चौकोर आइकन पर क्लिक करें।
5. क्लिक करने पर टॉप पर डिलीट का विकल्प दिखेगा। बस इस डिलीट ऑप्शन पर क्लिक कर दे और लीजिए हो गई आपकी सर्च हिस्ट्री डिलीट।

♦♦♦

साइबर सुरक्षा

मुकुंद कुमार रॉय,
एस.एन.एल.पी.

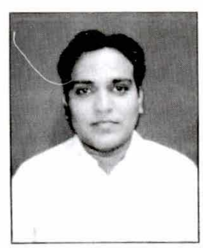

साइबर शब्द साइबरनेटिक्स का संक्षिप्त रूप है, जिसकी उत्पत्ति ग्रीक शब्द **"kubernētēs"** से हुई है इसका सम्बन्ध जीवित प्राणियों और मशीनों में संचार और नियंत्रण प्रणाली के अध्ययन से है। इस शब्द ने हमें एक और दुनिया बना कर दी है; और वह है कृत्रिम दुनिया। यहाँ कोई मीलों की दूरिया नहीं, कोई रंग, भाषा, लिंग, जाति, देश का भेदभाव नहीं, यहां ज्ञान, समाचार व मनोरंजन का खुला अक्षय भण्डार है। इसने हमारे काम करने के, सोचने के, यहाँ तक कि जीने के तरीके को बदल डाला है। हमारी कई जानकारियां, कंप्यूटर प्रणालियां, नेटवर्क और दस्तावेज इस साइबर स्पेस में दर्ज हैं, हम निश्चिंत हैं कि ये सभी कहीं न कहीं सुरक्षित हैं। इसकी तुलना वाशिंगटन पोस्ट में इस तरह से की गई है कि हमारे बैंक खाते, निजी दस्तावेज, देश व संगठनों की निजी जानकारियों साइबर स्पेस में ताला लगाकर सुरक्षित तो हैं पर चाभी फूलों के गमले के पीछे छिपा कर रख दी है। हम तब तक सुरक्षित हैं, जब तक साइबर अपराधी उस फूलों के गमले तक नहीं पहुंच जाता।

अभी सामान्य तौर पर साइबर अपराध के जो छोटे-मोटे मामले सामने आते हैं, वह प्राय: युवा या विद्यार्थी वर्ग द्वारा महज मजा लेने या खुराफात करने के होते हैं, लेकिन यदि इन्हीं तौर-तरीकों का उपयोग व्यापक पैमाने पर करने लगें तो भारी मुश्किलें खड़ी हो जाएंगी। साइबर जोखिम को तीन अलग क्षेत्रों में बांटा जाता है:

साइबर अपराध:
इस तरह के हमले व्यक्तिगत जानकारी जैसे क्रेडिट कार्ड, बैंक खाते, पासवर्ड हैक कर हमें नुकसान पहुंचाते हैं। व्यापक पैमाने पर इस तरह के हमले किसी वेबसाइट को हैककर, उसपर छेड़-छाड़ कर संगठन की कार्य-प्रणाली को बाधित करते हैं।

साइबर युद्ध:
इसमें एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र की कार्य-प्रणाली में व्यवधान पैदाकर या गोपनीय जानकारी चुराकर वहां अव्यवस्था फ़ैलाने के उद्देश्य से करता है। साइबर स्पेस के क्षेत्र में बिना किसी सीधे टकराव के भय पैदा किया जा सकता हैं।

साइबर आतंक: आतंकी संगठन फिलहाल इसका प्रयोग सूचना के आदान-प्रदान के लिए कर रहे हैं।

साइबर अपराध के संदर्भ में हमने वायरस, ट्रोजन, वर्म्स, स्पाई वेयर, मैलवेयर इत्यादि का नाम तो बहुत सुना है परन्तु इनके अलावा भी कई तरीके से ये अपराध किए जाते हैं। इनमें प्रमुख हैं, फिसिंग **(Phising)** जिसमें एक वैध संस्था का रूप धारण करके उपयोगकर्ताओं की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास है। दूसरा है फार्मिंग **(Pharming)** जिसमें एक वेबसाइट पर आने वाले यातायात को अन्य फर्जी वेबसाइट की ओर रुख कर दिया जाता हैं। तीसरा एक प्रणाली की विशिष्ट कमजोरियों को ढूंढ कर हमला करता है जिसे ड्राइव बाय **(Drive By)** कहते हैं। और आखिरी है "मैन इन द मिडिल" **(MITM)** अटैक, जिसमें अपराधी मिडिल मैन बनकर दोनों होस्ट और गेस्ट को नुकसान पहुंचाता है।

सुरक्षा के उपाय

1. कंप्यूटर के फ़ायरवॉल को हमेशा चालू रखें।
2. एंटी वायरस सॉफ्टवेयर अपडेटेड रखें।
3. ऑपरेटिंग सिस्टम अपडेटेड रखें।
4. कुछ भी नया इंस्टॉल करने से पहले जांच ले कि उस सॉफ्टवेयर के साथ कुछ और भी इंस्टॉल न हो रहा हो।
5. समय-समय पर टास्क मैनेजर में अनजाने प्रोग्राम की जांच करते रहें।
6. काम खत्म होने के बाद कंप्यूटर हमेशा बंद कर दें।
7. बैंक खाते, क्रेडिट/डेबिट कार्ड के पासवर्ड सिर्फ अपने पास रखें।
8. बैंक या अन्य किसी वेबसाइट पर जाने से पहले उसकी वैधता जांच लें।
9. ऑनलाइन ट्रांजैक्शन से पहले जांच ले कि वेबसाइट आपकी जानकारी एन्क्रिप्ट कर ले जा रही है।
10. किसी तरह के फ़ोन-कॉल, ईमेल व अन्य तरीके से आपकी गोपनीय जानकारी मांगने वाले लोगों पर भरोसा न करें।
11. भरोसेमंद **ISP** से ही इंटरनेट सेवाएं लें।
12. पेन ड्राइव इत्यादि के प्रयोग से पहले उसकी जांच एंटी वायरस सॉफ्टवेयर से कर लें।
13. लिनक्स ऑपरेटिंग सिस्टम का भी उपयोग कर सकते हैं।

संगठनों के लिए साइबर सुरक्षा

आईएसओ **27001:2013** अंतरराष्ट्रीय स्तर का सूचना सुरक्षा प्रबंधन **'बेस्ट प्रैक्टिस'** मानक है। यह हर साइबर सुरक्षा जोखिम प्रबंधन नीति की नींव है। आईएसओ **27001:2013** की मदद से संगठन अपनी डेटा संपत्ति की सुरक्षा कर अपने ग्राहकों और उपयोगकर्ताओं को भरोसा दिला सकता कि वे साइबर सुरक्षित हैं।

♦♦♦

नेविगेटर

- रजत, एम.टैक (आई.टी.)

परिचय

नेविगेशन सिस्टम वास्तव में इंटरनेट पर आधारित कई प्रकार की सुविधाओं को बेहतर बनाता है। इसका परम लक्ष्य व्यावसायिक और सैन्य क्षेत्र को एक नई दृष्टि प्रदान करना है। एक बेहतर नेविगेशन सिस्टम होना मानो अधिकतर चीज़ों की सही जानकारी होना है। जैसे कि नाम से ही पता चलता है 'निगरानी रखने वाला सिस्टम'।

इस सिस्टम के और बेहतर होने से कंप्यूटर एवं मोबाइल फोन जैसे उपकरणों को प्रयोगकर्ता को और अधिक सर्विस प्राप्त होती है। इस सिस्टम के द्वारा किसी व्यक्ति एवं वस्तु की जानकारी अथवा व्यक्ति अपने रास्ते खुद निर्धारित कर सकता है। इससे नई रहस्यमयी जगहों, चीज़ों की खोज अथवा दुश्मनों (Worriers) की निगरानी रखी जी सकती है।

भारतीय सैटेलाईट नैविगेशन सिस्टम का निर्माण स्पेस-बेस्ड पोजिशनिंग को स्वयं पर आधारित एवं बेहतर बनाना है। इस सिस्टम का पुनः निर्माण भारत के प्रधानमंत्री द्वारा किया गया है। भारत भी उन राज्यों की सूची में शामिल हो गया है जिन सभी के अपने नैविगेशन सिस्टम है। इस सिस्टम का औपरेशनल नाम (NAVIC) है। भारत के प्रधानमंत्री जी ने इस सिस्टम को समर्पित किया है भारत के 'मैरिनरस और फिशरमैन' को जो लाखों करोड़ों वर्षों से सूर्य एवं तारों की दिशा पर निर्धारित होकर आगे बढ़ रहे थे, इस सिस्टम के द्वारा वे अपने रास्ते खुद निर्धारित कर सकते है और यह उनके लिए एक बेहतर विकल्प साबित होगा।

आवश्यकता

इस सिस्टम के निर्माण की आवश्यकता इसलिए पड़ी क्योंकि विदेशी सरकार द्वारा कंट्रोल्ड नेविगेशन सिस्टम की विपरीत परिस्थितियों में सही समय पर सहायता न मिलना है। जैसे कि 'कारगिल' वार के दौरान हुआ था, क्योंकि भारत दूसरे देश यानी अमेरिकी GPS पर उस समय निर्भर था।

इस सिस्टम की आवश्यकता पड़ने के दो मुख्य कारण है। पहला कारण है कि आज के युग में ज्यादा सुरक्षा प्रदान करना अथवा हैकिंग जैसी समस्याओं का प्रभाव कम करना। दूसरा, किसी और स्रोत अथवा बिना नेविगेशन सिस्टम के आपातकालीन स्थितियों में सहायता न मिल पाने की स्थिति का होना। इसलिए उपर्युक्त विपरीत परिस्थितियों से निपटने के लिए इस सिस्टम का होना आवश्यक है।

निर्माण

इंटरनेट जैसी तकनीक में सुधार लाने के लिए भारत ने अपने नेविगेशन सिस्टम का निर्माण हाल ही में किया है। इस सिस्टम को बनाने के लिए सात सैटेलाइटों की मदद ली गई है। इन सैटेलाइटों के नाम एवं प्रक्षेपण तिथि IRNSS-1A जुलाई 2013 को, IRNSS-1B 4 अप्रैल 2014 को, IRNSS-1C 16 अक्तूबर 2014 को, IRNSS-1D 28 मार्च 2015 को, IRNSS-1E 20 Jan 2016 को, IRNSS-1F 10 मार्च 2016 को और IRNSS-1G 28 अप्रैल 2016 को। इस नैविगेशन सिस्टम के सिग्नल एस फ्रीक्वेंसी (2-4 GHZ) और फेज़ अरारी एंटीना पर काम करेंगे, जिससे सिग्नल लॉस कम होगा। इस सिस्टम की 3 सैटेलाइट जिओ और 4 सैटलाइट जी.एस.ओ.ऑरबिट पृथ्वी से लगभग 36,000 किलोमीटर की दूरी पर स्थित हैं।

फायदा

इस सिस्टम के इस्तेमाल से सभी प्रकार की गतिविधियों का सटीक अंदाजा लगाया जा सकता है। यह सिस्टम किसी भी प्रकार की गतिविधियों की सही जानकारी प्रदान कराएगा। इस सिस्टम का इस्तेमाल टोरेस्ट्रियल, एरियल एवं मरीन नेविगेशन, डिज़ास्टर मैनेजमेंट, वेहिकिल ट्रैकिंग इंटेरोगेशन, मोबाइल फोन सहित प्रिसाइज़ टाइमिंग, मैपिंग और जिओडेट्रिक डाटा बनाना, टेरेस्ट्रियल नेविगेशन, हाइकर एवं यात्रियों के लिए, ड्राइवरों के लिए दृश्य एवं ध्वनि नेविगेशन। यह सिस्टम भारत के अधिकतम 15,000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र की निगरानी करेगा।

निष्कर्ष

इस सिस्टम के निर्माण से इंटरनेट पर आधारित सभी तकनीकों में सुधार होगा जिससे सभी प्रकार के प्रयोगकर्ताओं को बेहतर सुविधाएं मिलेंगीं।

◆◆◆

जीवन रक्षक 'रक्त दान'

- रामजी गुप्ता
परियोजना अभियंता-II

सी-डैक, नोएडा द्वारा एक देशव्यापी ब्लड बैंक परियोजना पर काम किया जा रहा है। ब्लड बैंक की कुछ महत्वपूर्ण बातें जो रक्तदाता से संबंध रखती हैं, वह अभिव्यक्त की जा रही हैं।

तालिका- 1	तालिका-2	तालिका-3
संपूर्ण ब्लड	प्लेटलेट्स	प्लाज्मा

इन दिनों रक्तदान कई कारणों से जरूरी होता जा रहा है। रक्त में कई जीवनरक्षक तत्व होते हैं जो विभिन्न प्रकार से बीमारियों व चोटों को ठीक करने में मददगार होते हैं। सबसे अच्छी बात यह है कि जहां एक ओर जरूरतमंद को जीवन-दान मिलता है वहीं दूसरी ओर रक्तदाता को भी कई स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होते हैं।

18 से 60 वर्ष की आयु के स्वस्थ व्यक्ति जिनका वजन 50 किलो से अधिक है वह 450 मि.ली. रक्तदान कर सकते हैं। पुरूष 3 महीने में एक बार और महिलाएं चार महीने में एक बार रक्तदान कर सकती हैं। रक्तदान की प्रक्रिया अस्पतालों, क्लीनिकों और ब्लड-कैंप में होनी चाहिए। अगर आप स्वस्थ हैं तभी रक्तदान करें। अगर कोई बीमारी है और दवाईयों का सेवन कर रहे हैं तो रक्तदान न करें। रक्तदान से पहले डॉक्टर द्वारा परीक्षण अवश्य करवाएं जिससे वह आपकी योग्यता का निर्धारण कर सके।

क्या-क्या लाभ होते हैं एक रक्तदाता को.....

1. रक्तदाता को कैंसर के रिस्क से दूर रखता है।
2. यह कोलेस्ट्रॉल को कम करता है। जिससे हृदय रोग, स्ट्रोक की समस्याओं को कम किया जा सकता है।
3. रक्तदान से आपको हेमोक्रोमाटोसिस (Hemochromatosis) की समस्या का भी सामना नहीं करना पड़ता। इस प्रक्रिया में लिवर और पाचन ग्रंथि को भी काफी कम नुकसान पहुंचता है।
4. नियमित अंतराल पर रक्तदान करने से शरीर में आयरन की मात्रा संतुलित रहती है और यह रक्तदाता को हृदय आधात रक्तचाप से दूर रखता है।
5. इससे ज्यादा कैलोरी और वसा बर्न होती है जिससे शरीर चुस्त रहता है।
6. रक्तदान से नई कोशिकाओं का निर्माण होता है।
7. रक्तदान से आयरन का स्तर नियंत्रित रहता है जिससे रक्त गाढ़ा बनता है और फ्री रेडिकल डैमैज बढ़ता है।

रक्त जमा करना और स्वास्थ की जांच

आप अपने खून को जमा कर सकते हैं, जिससे कि भविष्य में इसका प्रयोग किया जा सके। अपने खून को एक गुणवत्ता वाले ब्लड बैंक में जमा करवाएं, जहां नवीनतम तकनीकों का प्रयोग होता हो। अगर आप हेपेटाइटिस या एड्स से ग्रसित है तो ब्लड बैंक आपको सूचना भेजता है और गोपनीय रखता है। ऐसे व्यक्तियों का ब्लड निष्कासित कर दिया जाता है।

रक्तदान के फायदे व आवश्यकता

1. रक्तदान करने के बाद शरीर तेजी से दोबारा रक्त बनाता है।
2. लाल रक्त कोशिकाएं 3 सप्ताह के अंदर बन जाती हैं।
3. 24 से 48 घंटे में पूर्ण मात्रा में प्लाज़्मा बन जाता है।
4. प्लेटलेट्स एवं हल्की रक्त कणिकाएं कुछ मिनटों में बन जाती हैं।
5. रक्तदान में सिर्फ 15-20 मिनट लगते हैं।

6. यूनिट रक्त से प्लाज्मा, प्लेटलेट्स (अवक्षेप) और सफेद रक्त कणिकाएं बनती हैं, जो डेंगू, मलेरिया इत्यादि रोगों में सहायक होती हैं।
7. थेलेसेमिया के मरीज को एक अंतराल के बाद कुछ यूनिट रक्त की आवश्यकता होती है जोकि रक्तदान देने से ही पूरी हो सकती है।

"मानक रक्त का निर्माण नहीं किया जा सकता है।
ये रक्त सिर्फ एक मनुष्य ही आपको प्रदान कर सकता है।।"

◆◆◆

दान की भावना

- अनिल कुमार
मानव संसाधन

आजकल शहरी जिंदगी में वीकेंड पर मॉल या मार्केट जाना जीवन का हिस्सा बन गया है। वहां बाजार की चमक-दमक देख कर हम कुछ चीजें खरीद लेते हैं, चाहे उनकी जरूरत हो या न हो। कभी-कभी इस पर हम पछताते हैं, अरे! इसे तो बेकार खरीद लिया, इसकी जरूरत अभी नहीं थी। यह कुछ और नहीं, सिर्फ भोग के प्रति हमारे बढ़ते कदम का सूचक है। जो समय के साथ हमारे भीतर असंतोष और लालच को बढ़ाता है। दूसरी तरफ़ एक रास्ता है दान और परोपकार का।

कहते हैं कि दान देने का नाम ही जीवन है। हमारे यहां देवता का अर्थ भी यही है- दाता यानी कुछ देने वाला। हमारा जन्म तभी संभव हो पाता है, जब मां अपने सुख-चैन-सांसें-रक्त सब कुछ हमें देती है। सृष्टि की हर संरचना पर नजर डालिए। हमें हर संरचना कुछ-न-कुछ देती नजर आती है, जैसे सूरज-प्रकाश, चंद्रमा-शीतलता, पानी-जीवन, हवा-सांस, पेड़-फल, पक्षी-मधुर स्वर। लेकिन हम इंसान हर कीमत पर सिर्फ अपने फायदे की ही बात सोचते हैं। वेदों के अनुसार, दानशीलता हृदय का गुण है, हाथों का नहीं। जो व्यक्ति समाज के लिए कुछ करता है, उसका जीवन ही सार्थक माना जाता है। कहा जाता है कि प्रकृति के संसाधनों पर सबका अधिकार है। इसलिए, हमें आपस में बांटकर चीजों का उपयोग करना चाहिए। दान हम जहां चाहें, जब चाहें, कहीं भी, कभी भी, किसी चीज का कर सकते है। जैसे- ज्ञान, श्रम, भूमि, रोटी, कपड़े, वगैरह। कहा गया है कि असल में बड़ा, दाता वही है, जो दान करते समय थोड़ा भी अहंकार न करे। जबकि लोगों का मानना है कि हमें दूसरों को अपनी सेवा, प्रेम, धन, जो जितना बन पड़े, देना चाहिए। इससे हमारे अंदर आत्मसंतोष की भावना जागती है।

और कहा तो यह भी जाता है कि दान देते समय दाहिने हाथ से दान किया जाए, तो बाएं हाथ को पता नहीं चलना चाहिए।

◆◆◆

निरालाः कुछ अनुभूतियाँ, कुछ स्मृतियाँ

डॉ. किरन शुक्ल
सलाहकार (हिन्दी)

स्मृति पटल पर न जाने कितने जाने-अनजाने चेहरे अंकित हो रखे हैं। समय अवस्था और हृदय में उठते ज्वार कब किस चेहरे को वाणी के तट पर ला पटकें और लेखनी उस चेहरे को मूर्त रुप देने के लिए मचल उठे, यह कौन जानता है! हृदय की पीर शब्दों का जामा पहन कर फूट-फूट ही तो पड़ती है। उन्हें न कह पाने की कसक, उन्हें छुपा कर, संजोकर रखने की लाचारी से जब काम नहीं चलता है, तब सरस्वती जिह्वा में उतरकर निःसृत हो उठती है। निराला! महाप्राण! महामानव! सूर्यकांत त्रिपाठी निराला को देखे हुए एक युग बीत गया है। बाल्यावस्था की चपलता की जगह अब अधेड़ावस्था की परिपक्वता ने ले ली है। निराला के अतीत, उनकी स्मृतियाँ, उनकी रग-रग यादों से जुड़ी कुछ परतों के रंग हल्के होने लगे हैं। मस्तिष्क की दीवारों पर कलई चढ़ती श्वेत परतों के भीतर उघाड़ कर झांकने पर कुछ यादें, आज भी मेरे उस नन्हें से मन को भीतर से तरंगायित कर जाती हैं। सोचती हूँ बचपन की उन्हीं कुछ यादों को इस संस्मरणात्मक लेख के जरिए सामने लाऊं। जब ये यादें इस लेखनी का सामना करेंगी, कुछ ऊहापोह तो रहेगी ही, क्योंकि ये ऐसी परिकल्पना है जो कहीं से उधार नहीं ली गई है। जीवन ने जो कुछ दिया है, जो कुछ मैंने लिया है, हृदय ने जो भोगा है, आँखों ने जो कुछ भी संवारा है, वो स्मृति के कटोरे में ताजे भात जैसा अब भी मानो सोंधी महक लेकर बैठा हुआ है।

निराला जहाँ हुए, मेरा बचपन भी उसी मोहल्ले में गुजरा। दारागंज मोहल्ला गंगा तट से कुछ ऊंचाई पर बसा है। उसके चौराहे, जिसे अड्डे के नाम से जाना जाता है, को अगर रिक्शेवालों से चलने को कहो, तो वे कहेंगे 'ढाल के ऊपर जाना है या नीचे ही उतरेंगे' गोया यह मोहल्ला न हुआ, कोई प्रहरी हुआ, जो ढाल लेकर खड़ा हो और कह रहा हो कि हममें भी बुलंदी है। उसी अड्डे के बाएं जाती सड़क की ओर पूरी एक प्राचीन बस्ती बसी है जिससे हर आगंतुक पूछता है कि अमुक स्थान कोठी के पास कहां पर है। निराला जी एक विशाल गली-बड़ी कोठी की गली में रहा करते थे। घर जाने से पहले वे रिक्शा एक हलवाई की दुकान पर रुकवाते थे। उस हलवाई का नाम शायद जगन्नाथ हलवाई था। वह हलवाई शादी-विवाह के अवसरों पर हमारे घर पर खाना बनाया करता था। जब हमने उस हलवाई से बात की, तब उसने बताया कि साहब उनका कोई हिसाब थोड़े ही होता था। वे अपनी मनमर्जी की मिठाइयां-जलेबियां खाते थे और जरूरत से ज्यादा पैसे दे जाते थे, जो वापस देने पर भी नहीं लेते थे।

बचपन की न जाने कितनी स्मृतियाँ हैं, अनुभूतियां हैं, जिन्हें कुरेदने पर कुछ-न-कुछ नया-सा, अनमोल-खजाने सा अवश्य मिल जाता है। जब हम नन्हें से थे, तब घर से कुछ दूर पर सबसे बेहतर म्युनिसिपैल्टी स्कूल में पढ़ा करते थे। वह स्कूल मोती महल में हुआ करता था। मोती महल गंगा के ठीक तट पर बसा हुआ एक राजा का महल था। इसका एक हिस्सा बाद में स्कूल में तबदील कर दिया गया था। ककइया ईटों के बने उस स्कूल को जाने के लिए हमारे घर बक्शी से बड़ी कोठी की गली में प्रवेश करते हुए इस शिक्षा महल तक पहुंचना पड़ता था। रास्ते में निराला जी का घर पड़ा करता था। हम लोग बालसुलभ जिज्ञासावश सीखचों से झांक-झांक कर निराला जी का कमरा देखा करते थे और यह जानने की कोशिश करते थे कि वे क्या कर रहे है। वे गली में खाली गमछा या ऊंची-सी बेतरतीब बंधी लुंगी बांधे अपने लहीम-सहीम खुले बदन में घूमा करते थे। हम बच्चे उन्हें देखते ही भागते थे और गली का रास्ता बदल देते। उनकी लाल-लाल अंधमुंदी आंखों से हमें बहुत डर लगता था। उस ब्राह्मण समाज में शायद निराला जी के मांस खाने के बारे में काफी किंवदंतियाँ फैली थीं। उसी के कुछ अंश हमारी झोली में भी पड़ गए थे और हम बुदबुदाते कि ये मांस खाते है और बच्चों को पकड़ ले जाते हैं। एक बार तो लुंगी में टहलते, चहलकदमी करते हुए निराला जी हमारे घर चले आए थे और बाहर बैठक में बिछे तख्त पर बैठ गए थे। 'वह तोड़ती पत्थर' सा माहौल घर का बना हुआ था। उन दिनों हमारे मकान में कुछ जोड़-तोड़ हो रही थी। वे बाहर पड़ी गिट्टियों को घूरते रहे, ताकते रहे। उन्होंने पूछा- 'नया मकान बन रहा है?' हमने उनकी आवभगत की। बैठने को कहा। मुझे याद है कि निराला जी औरेब काट की सफेद बनियान और लुंगी पहना करते थे। उस बनियान के बगल में कुछ जेबें लगी होती थी।

कुछ अजीबोगरीब भ्रांतियां, जो उस समय के समाज में, मोहल्ले में उड़ी हुई थीं, आज परिपक्व होने पर उन्हें विश्लेषित करती हूँ, तो बड़ा अचम्भा और ताज्जुब होता है। कोई एक गोरे-गोरे से सज्जन श्री सिंह हुआ करते थे। शायद उनका सिर कुछ गंजा था। उन्हीं के मकान के निचले हिस्से में निराला जी ने कमरा ले लिया था। अपनी मृत्यु तक वे वहीं रहे। हमने सुना था कि निराला जी के बेटे उन्हें नहीं रखते हैं तथा उनकी बहू उन्हें कथित रूप से झाड़ू से मारने के लिए दौड़ती हैं। बड़ा अचम्भा हुआ जब हमने उनके पौत्र से यह बात की। सबसे ज्यादा अचम्भा तो तब हुआ जब देखा कि चाची जी (निराला की पुत्रवधू) बड़ी सौम्य है, साक्षात ममता की प्रतिमूर्ति हैं, जिनके मुंह से एक मुस्कान स्नेह के साथ बिखर जाती है। आज भी अपने घर साल दो साल में जाती हूँ तो मां-बाप की कमी नहीं अखरती। हमें ही नहीं हम सभी बहनों को जो वात्सल्य और स्नेह आज भी रामकृष्ण चाचा जी (सुपुत्र निराला) व चाची जी से मिलता है, उसकी प्रतिपूर्ति नहीं की जा सकती। यानी जो स्नेह हमें छलका कर रख देता है, वह स्नेह अपने पितृ या श्वसुर को कैसे झुठला सकता है, उसका कैसे तिरस्कार कर सकता है। अब जब इन चीजों पर मेरी पैठ हो चुकी है और निराला परिवार से इतने घनिष्ठ संबंध हो चुके हैं, तो यही समझ में आता है कि कहीं यह पुस्तकाधिकार की तह में छिपी कोई बनावटी मनगढंत चाल तो नहीं। बीच में इन विवादों और कुचक्रों के कई दौर से निराला परिवार को गुजरना पड़ा। शायद कोर्ट में केस भी चला।

इन निहित तथ्यों या मन की जिज्ञासाओं को समाज के मंच पर लाने का आशय किसी व्यक्ति या उसकी भावनाओं को ठेस पहुंचाना बिल्कुल नहीं है। यह तो एक संस्मरण मात्र है, जिसे अपनी उम्र के पहले दशक में मैंने महसूस किया, गुना, संजोया था। महाकवि की छवि को घूमिल करने की बात तो सोची भी नहीं जा सकती है। गुहा के भीतर छिपे सत्य को बाहर निकालने के लिए, उसके एक-एक पत्थर को तोड़ने की कसक ही शायद मेरे जेहन में आज तक भरी हुई है। लगता है निराला का अणु-अणु मेरे रग में समोया हुआ है। द्रष्टा, चिंतक, विचारक, मनोविज्ञ, कवि सब तो उन गलियों में अभी भी सूराखों से झांकता है, चहल कदमी करता है, जो कभी-कभी [illegible]खों, उद्गारों और कवित्व की शक्ल में अपने आगे आने वाली पीढ़ियों को सदियों तक इसी तरह महमहाता रहेगा।

बसन्त आ रहा है......... महाकवि की पुण्यतिथि। उधर महाकवि की प्रयाण यात्रा को जैसे साक्षात निहारती, चौराहे की तरफ मुंह ताकती, वह मूर्ति फिर एक बार अपनी ओर उमड़ने वाले जनसमुदाय का विलोकन करेगी। फिर एक बार वासन्ती रंगबिरंगी धोतियां निराला की प्रतिमा के चारों ओर सूखने लगेंगी। शायद ये इस बात की प्रतीक हैं कि निराला को अभी भी प्रयाग के अपने उन श्रद्धालुओं, मेलावासियों और स्नानार्थियों से उतना ही लगाव है, उतना ही सम्मोहन है कि वो दिवंगत होने के बावजूद आज भी अपने ओर-छोर लहराते हुए उन्हें देखना चाहते हैं, जैसे मूक स्तब्ध नई कविता नए सृजन की तलाश में फिर से रत हो जाना चाहते हों।

गंगा

निष्ठा जायसवाल

एस.एन.एल.पी.

भागीरथ के प्रयत्नों से, धरा पर आई है गंगा।
सुना है शांतनु की अर्धांगिनी भी, कहलाई है गंगा।
ब्रहमा के कमंडल, शिव की जटाओं को, तर कर आई है गंगा।

इतना ही नहीं, कई औरों के मन को भी, बहुत भाई है गंगा।
अगणित नर-नारी, पण्डे और भिखारी, एक बार नित्य गंगा में नहाते हैं।
गंगा की पवित्रता ग्रहण कर, अपनी अपवित्रता गंगा में छोड़ आते हैं।

जनता का सहयोग, सम्मान आदर की यह नीति सरकार को भाती है।
तभी गंगा मां हम सबका आतिथ्य स्वीकार कर जन-मानस में समाती है।
लें शपथ मुक्त करें प्रदूषण से अकुलाई गंगा को।

यही है वो गंगा है जो जीवन दिलाती, अविचल गंगा कहीं न समाती गंगा।
दुहाई देती गंगा अपने निस्तारण अपनी लाज बचाने को।।

♦♦♦

मेरा सुनहरा गांव

- उमेश कुमार
एम.टैक. (सी.एस.ई.)

यूं तो वह मेरा ननिहाल है, पर है मेरे दूसरे घर जैसा ही। दो-तीन दिन की छुट्टियां हाथ लगते ही गांव घूमकर आने का मन करने लगता है। आइए, मैं आपको अपने गांव ले चलता हूँ।

बुलन्दशहर से 10 किमी आगे जाकर, मेरा गांव 'हुरथला' पड़ता है। दादरी और सिकंदराबाद की फैक्टरियां पार होते ही खेत खलिहान शुरू हो जाते हैं। दूर - दूर तक फैली हरियाली किसी को भी मोहित करने के लिये काफी है। हल्की धूप के बीच काम करते लोग, घास चरते पशु, किलोल करते पक्षी, हम्म..... शहर की आपा-धापी से बिलकुल अलग। गांव पहुंचने पर नाना जी गले से लगा लेते हैं। उनकी घनी सफ़ेद मूछें और झुर्रियोंदार चेहरा बताता है कि अपनी उम्र के कितने सावन वो देख चुके हैं। मोती बार-बार ऊपर को आता है, जैसे कि पूछ रहा हो कि पिछले महीने कहां गायब थे मियाँ ? घेर में बंधे हुए पशु अपनी मुंडी घुमाकर ऐसे देखते हैं कि भई! ये कौन आ गया! उसके बाद जितने में हम नीम के नीचे की खाट पर तशरीफ़ रखते हैं, उतने में घूंघट डाले हुए मामी जी पानी लेकर आती हैं। नल के मीठे जल का कोई जवाब ही नहीं है। एक अलग ही तृप्ति का एहसास होता है। बड़े भाई जब कॉलेज से वापस आ जाते हैं, फिर जो बातों का दौर चलता है, वो शाम का खाना लगने तक खत्म ही नहीं होता। चूंकि गांव में बिजली नहीं है, शाम को अंधेरा होते ही सब सिमटने सा लगता है। मिट्टी के चूल्हे में लकड़ी और कंडे जलाकर खाना बनने लगता है। दूर-दूर तक कोई ख़ास रोशनी नहीं, बस हल्के जलते चूल्हों की रोशनी, उधम मचाते बच्चे, और बीच-बीच में मोर की आवाज। चूल्हे की लकड़ी की महक... हम्म्म... एक अलग ही एहसास दिल में बिठा चुकी है। वो चूल्हे की रोटी का स्वाद ही अलग है। खैर, खाना खाकर घर से हम घेर की तरफ चलते हैं। नीम के नीचे खाट बिछाकर, तारों के नीचे, खुली हवा का आनंद लेते हुए लेट जाते हैं। थोड़ी-बहुत बातें होती हैं। दूर कहीं आपस में लोगों के बात करने की आवाज आती है। रह-रह कर कुत्ते भौंकने लगते हैं। झींगुरों की झनझन तो निरन्तर चलती रहती है। वाह! गांव की रात कितनी सुरीली होती है। खैर, सुबह मोर की आवाजों से पौ फटते ही नींद खुल जाती है। कितनी ताज़ी और ठंडी हवा चल रही होती है, दिलखुश एकदम! नीम की छोटी टहनी तोड़कर, उसका कड़वा दातून करते हैं। पशुओं को सुबह-सुबह चारा डालकर निवृत्त कर दिया जाता है। उसके बाद खेत पर जाने की तैयारी। मामा जी बैल को खोलकर गाड़ी में जोड़ते हैं। जरुरी औज़ार लेकर खेत की तरफ अपनी बैलगाड़ी चल पड़ती है। सुबह की ओस, हल्की लालिमा वाला सूरज, फसलों की महक और ठंडी-ठंडी बयार! क्या जादू है! कोई जवाब नहीं! बीमार आदमी की भी तबियत खुश कर दे, ऐसा मौसम होता है गांव का सुबह-सुबह! किसी ने गेहूं बो रखे हैं, तो किसी ने बाजरा, किसी ने अरहर, तो किसी ने गन्ने। हवा के झोंकों से फसलें झूमने लगती हैं। मोती हमारी बैलगाड़ी के पीछे मटक-मटक कर चल रहा है। रास्ते भर में लोग खेतों में काम करते हुए मिलते हैं। आखिर में हमारी बैलगाड़ी रूकती है और हम खेत में पहुंच चुके हैं। आज गन्ने काटने हैं। फसल दस फुटी हो चुकी है! आहा! आज तो गन्ने से ही पेट भरेंगे! मामा जी सबसे मीठा गन्ना काट कर हमें देते हैं। हम्म... गन्ने इतने मीठे हैं कि अगर एक साथ 4-5 खा लिए जाएं, तो पक्का शुगर हो जाएगी! दूर-दूर तक फैले हुए खेत और आम के बाग। एक ही पेड़ पर पचासों आम लगे हुए हैं, पर अभी वो सब कच्चे हैं! मामा जी से नज़र चुराकर एक बड़ा-सा आम तोड़ तो लिया, पर वो भी खट्टा निकला! खैर, मामा जी लगे अपने काम में, और हम भाई लोग निकलते हैं सैर पर! ट्यूबवैल में खूब ठंडा पानी चल रहा है, मन कर रहा है एक बार तो डुबकी लगा ही ली जाए पोखर में। मामी जी के बांधे हुए परांठे और मक्खन खोल कर खाते हैं। क्या स्वाद है!

ऐसा स्वाद तो पिज़्ज़ा-बर्गर में भी नहीं है। गांव की हर चीज़ में जादू छुपा है। खैर, हम घर वापस जाते हैं। गांवों में एक खासियत है, आपको हर कोई आपके बड़े-बूढे के नाम से पहचानता है - अरे ये तो अपने चौहान साहब का नाती है! और एक सबसे अच्छी बात - आप किसी के भी यहां जाकर बैठ सकते हो, खाना खा सकते हो। बहुत प्रेम है यहां लोगों में! और यहां दिल्ली में? अपना स्कूटर किसी के घर के साइड में सिर्फ 5 मिनट को लगा कर तो देखो! कैसा स्वागत करेगा वो सब जानते हैं! खैर, अब आती है जाने की बारी! कल कॉलेज भी तो जाना है, अब तो विदा लेनी ही पड़ेगी! बहुत मना करने पर भी मामी जी 100 रुपए विदा में पकड़ा देती हैं, कहती हैं कि चिज्जी खाना! मोती काफी दूर तक हमारी कार के पीछे भागता है, रोकने के लिए। पर क्या करें, जाना तो है। भारी मन से सबको विदा करके, हम वापस दिल्ली के लिए निकलते हैं। रास्ते में वही सब याद आ रहा होता है। मन करता है वापस गाड़ी घुमाऊं और वहीं रुक जाऊं। सच में, जब भी वहाँ होते हैं, वहीं के होकर रह जाते हैं।

◆◆◆

मेरी काज़ा यात्रा

भूपेन्द कुमार,
एस.एन.एल.पी

रास्ते हमारे इंतजार में थे, बढ़ना शुरू किया जब हमने
लिपट गए वो कदमों से जैसे बच्चे, किसमें वो साहस है जो झटके
हम निकले उंगली थामे उनकी हाट जिस तरफ थी
क्योंकि वहीं हमारी खुशियों की भी जमघट थी......... कुमार अनुपम

नई जगहों का अन्वेषण करने का शौक मुझे हमेशा से रहा है। मित्रों के साथ मैंने अनेकों यात्राएं की हैं, लेकिन यादों और अनुभवों का अनुपम मिश्रण जो काज़ा यात्रा के दौरान प्राप्त हुआ, वह अद्वितीय है और उसका वर्णन मैं इस लेख के माध्यम से कर रहा हूँ। दैनिक जीवन की सामान्य गतिशीलता को समाप्त करने को आतुर मेरे पांच मित्रों ने जब बाइक यात्रा की योजना बनाई तो एक नवीन रोमांचकारी यात्रा के खयाल से ही मेरा ह्रदय उमंग से भर गया। कहते हैं जीवन खुद ही एक यात्रा है, मेरा तो मानना है कि यात्रा जीवन को सुगंध प्रदान करती है, जीवन को सरस बनाती है। तो ले चलता हूँ मैं आप सभी को काजा की ओर जो हिमालय की गोद में बसा हुआ है और हिमाचल प्रदेश की प्राकृतिक सुन्दरता का अप्रतिम दृश्य प्रदान करने वाला अत्यंत ही मनोहर उदाहरण है।

हमारी यात्रा की शुरुआत दिल्ली से हुई। शाम को 8 बजे जब लोग दैनिक क्रियाकलापों से निवृत होकर घर पहुँच रहे होते हैं, मित्र मण्डली के साथ मैंने अपनी बाइक यात्रा शुरू की। रात में यात्रा करने की वजह यह थी कि रात में समतल रोड की अधिकाधिक दूरी तय की जा सकती है। सुबह 3 बजे हम कालका पहुँचे। कालका, देवी काली के, कालिका मंदिर के लिए पूरे भारत में सुविख्यात है। कालका पहुंच कर हमने कालका रेलवे स्टेशन का नजारा देखा। इस रेलवे स्टेशन की विशेषता यह है कि यहाँ भारतीय रेल की ब्रॉडगेज और नैरोगेज, दोनों ट्रैक एक साथ नजर आते हैं। ट्वॉय ट्रेन से पहाड़ी रास्तों का सफ़र कर शिमला जाने का खास वर्णन तो हमने सुन ही रखा था और इच्छा भी थी कि इसका लुफ्त उठाया जाए लेकिन बाइक की रोमांचकारी यात्रा को छोड़कर किसी दूसरे रुख को अख्तियार करने का सवाल ही नहीं उठता था। कालका से हम शिमला होते हुए नारकंडा पहुंचे। शिमला की भीड़-भाड़ वाली शहरी आपा-धापी से परे नारकंडा एक बहुत ही खूबसूरत स्थान है। नारकंडा में एक छोर से दूसरे छोर तक विहंगम पर्वतीय नजारा मिलता है। आगे बढ़ते हुए हम लोग रामपुर पहुंचे। रामपुर सतलुज नदी के किनारे बसा हुआ एक छोटा सुन्दर शहर है। यहाँ से प्रख्यात भीमाकाली मंदिर 22 किलोमीटर की दूरी पर सराहन नामक स्थान पर अवस्थित है जिसके दर्शनार्थ श्रद्धालु एवं यात्री दूर-दूर से आते हैं। रामपुर से हिमालय के दुर्गम पहाड़ी रास्तों की शुरुआत हो जाती है। सतलुज नदी के किनारे ठंडी हवाओं के वितान के सहारे रात व्यतीत करना, हम सभी के लिए एकदम ही नया रोमांचकारी अनुभव था।

यात्रा के तीसरे दिन सुबह हम नाको गाँव की तरफ चल पड़े जो रामपुर से 185 किलोमीटर की दूरी पर है। 100 किलोमीटर की दूरी तय करने के बाद हमारा सामना पंगी नाला से हुआ। ग्लेशियरों के बर्फ पिघलने से वहाँ का मार्ग काफी कीचड़ भरा और दुर्गम हो चुका था। किसी तरह इस रास्ते को तय कर रिकांग पिओ पहुंचे ही थे कि बारिश शुरू हो गयी। पहाड़ों पर बारिश का नजारा तो देखने लायक होता है। इस सुहावनी बारिश ने एक तरफ जहाँ धुन्धमय पर्वतीय वृष्टि का दृश्य दिखाया तो वहीं दूसरी तरफ 3 घंटे का विलम्ब भी कराया। शाम हो चली थी इसलिए हमने कल्पा पहुंचने का निश्चय किया जो 15 किलोमीटर की दूरी पर ऊपर की ओर अवस्थित था। कुछ ही देरी में घनघोर बारिश शुरू हो गई और कल्पा जाने का हमारा यह निश्चय धरा का धरा रह गया। ठण्ड काफी बढ़ चुकी थी और ठण्ड की वजह से सबके शरीर में कंपकंपी शुरू होने लगी। पास के निर्माणाधीन जगह से लकड़ियां लाकर जब जलाई तब जाकर कुछ राहत नसीब हुई। हमें परेशानी में देखकर हरीश कुमार नामक एक स्थानीय सज्जन ने घर चलने का निमंत्रण दिया। उनकी इस परोपकारिता ने पहाड़ी लोगों की भलमनसाहत के प्रति हमारे विश्वास को और मजबूत कर दिया। उन्होंने चाय के साथ

हमारी खातिरदारी की। कहना न होगा कि उनकी सहायता के बगैर हम आगे की यात्रा कर सकने में असमर्थ थे और वापसी की योजना बना रहे थे। थोड़ी देर में बारिश भी रुक गई तो विनम्रता से हमने उनसे विदा ली और कल्पा की यात्रा तय की। कल्पा पहुंच कर हमने एक होटल में रात व्यतीत की। सारी रात धुआंधार बारिश होती रही, तापमान 2 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच गया जिसने हमें ठिठुरने पर मजबूर कर दिया। अलाव जलाकर ठण्ड से जो राहत मिली उसका तो वर्णन ही नहीं किया जा सकता।

कल्पा जो रात में काफी भयानक वातावरण से युक्त किसी डरावनी जगह का प्रतिबिम्ब बना हुआ था, सुबह तक स्वर्ग सदृश दृश्य प्रदान कर रहा था। सेब के पेड़ों से भरा हुआ इलाका और नीला आसमान, कल्पा की खूबसूरती में चार चाँद लगा रहा था। हमने कल्पा रुककर इससे और रूबरू होने का निश्चय किया। रेकोंग पीओ मार्केट का मनमोहक नजारा और वहां का स्थानीय खाना, उस जगह की यादों को आज भी जेहन में ताज़ा कर देता है। पूरे दिन थोड़े थोड़े समय के अंतराल पर बारिश होती रही। बारिश की वजह से आगे की यात्रा संभव नहीं हो पा रही थी अतः जब भी हमें समय मिला हम कल्पा की सैर पर निकल जाते। पूरे दिन के समय ने स्थानीय लोगों के विषय में जानने और घुलने मिलने का बेहतरीन अवसर दिया।

हमारी यात्रा का यह पांचवा दिन था और काज़ा अभी भी 200 किलोमीटर आगे था। कल्पा और काज़ा के बीच में दूसरा कोई पेट्रोल पम्प नहीं था अतः पहले हम अपनी गाड़ियों के लिए ईंधन का प्रबंध करने हेतु पेट्रोल पंप पहुंचे। पता चला कि बारिश और भूस्खलन की वजह से तीन दिनों से तेल का टैंकर नहीं आ पाया था। स्थानीय मार्केट वापस जाकर हमने बर्फीले सुहावने मौसम और खाने का आनंद उठाया। शाम को तक़रीबन 3 बजे जब टैंकर आया तो पेट्रोल की जरूरत को पूरा कर हम अपने अगले पड़ाव की ओर निकल पड़े।

अब तक हम लोग काफी समय रास्ते में ही व्यतीत कर चुके थे। सर्वसम्मति से हमने सोचा कि बाइक तेजी से चलाकर काज़ा पहुंचा जाए। अभी कुछ दूर चले ही थे कि हमारा सामना एक ऐसे रास्ते से हो गया जिसे सीमा सड़क संगठन ने विश्व की सबसे दुर्गम सड़कों में शामिल किया है। यह संकरा और पथरीला रास्ता जो पहाड़ काट कर बनाया गया था, बिना किसी रेलिंग का था। यही नहीं सड़क के साथ 500 फीट गहरी खाई थी जो हर क्षण हृदय को दहला रही थी।

20 किलोमीटर की इस यात्रा को तय करने में हमें डेढ़ घंटे का समय लग गया। अब तक हम लोग स्पिलो ही आ पाए थे। यहाँ का प्राकृतिक नजारा काफी लुभावना था जिसने हम लोगों को काफी आकर्षित किया। भूरे पहाड़ों के बीच सफ़ेद और गुलाबी फूलों के साथ खड़े पेड़ों ने एक अजीब सी रौनक बिखेर रखी थी। स्पिलो में सीमा सड़क संगठन के कार्यालय के सिवाय कोई दूसरा स्थानीय आवास स्थल नहीं है। यहाँ सीमा सड़क संगठन के कुछ अधिकारी हमें मिल गए और चाय की चुस्कियों के साथ हमें कई रोमांचकारी वाकये सुनने को मिले। आगे की तरफ निकलते हुए उस दिन हम लोग पुह गाँव पहुंचे और पी डब्लू डी के विश्राम गृह में ठहरे।

अगले दिन यानि यात्रा के छठे दिन उठने के बाद हम यह तय कर चुके थे कि आज हर हालत में काज़ा पहुंचना ही है। सुबह का नाश्ता हमने ख़ाब गाँव में किया। जल्दी ही हम "का" गाँव आ गए जो ढलान का अद्भुत नजारा प्रदान करने के लिए मशहूर है। सड़क की ऊंचाई अचानक ही काफी बदली हुई थी और नीचे की तरफ तक़रीबन 15 किलोमीटर की सड़क अपने घुमावदार रास्तों के साथ एक अलग ही मंजर दिखा रही थी। यहाँ चारों तरफ़ वृक्ष रहित पहाड़ों का दृश्य था। कुछ समय तक "का" गाँव के पास ट्रैकिंग कर, हमने अपनी यात्रा को जारी रखा। रास्ते में एक प्रसिद्ध पर्वतीय स्थल नाको आया। समुद्र तल से 12 हज़ार फीट की ऊंचाई पर बसा हुआ नाको गाँव चारों तरफ से श्वेत हिमालय की अत्यंत ही मनभावन झलक दिखा रहा था। चारों तरफ इस कदर सफ़ेद बर्फ की चादर बिछी हुई थी कि सूरज की किरणें परावर्तित होकर चकाचौंध उत्पन्न कर रही थीं और हमें काले चश्मे का सहारा लेना पड़ रहा था। ऊंचाई

और पेड़ों की कमी की वजह से इस जगह पर ऑक्सीजन का स्तर भी काफी कम था। नाको के अत्यधिक ऊंचाई पर होने की वजह से परिवहन के विरल साधन ही उपलब्ध हो पाते हैं अतः भारतीय सेना के वायवीय यातायात के वास्ते एक हेलिपैड का निर्माण किया गया है। यह हेलिपैड लगभग चारों तरफ से हजारों फीट गहरी खाई से बाकी पहाड़ों से अलग है। इसकी खासियत यह है कि आसपास के बाकी पहाड़ भी लगभग समान ऊंचाई के हैं। नाको गाँव में ही एक झील है जो पूरे साल बर्फ से आच्छादित रहती है। यहाँ हमें एक स्थानीय बाल मण्डली मिली जिसने हमें नाको का भ्रमण कराया। वे हमें स्थानीय बौद्ध धर्म गुरु "लामा" के आवास पर भी ले गए। प्राकृतिक सुन्दरता का जो मनोहारी दृश्य हमने देखा उसके स्मरण मात्र से ही मेरा मन वापस उस जगह पर जाने को आतुर हो जाता है।

यात्रा के अगले पड़ाव पर हम सुम्डो गाँव पहुंचे। यह एक आर्मी ज़ोन है और भारत – चीन की सीमा-रेखा निर्धारित करती हुई सड़क काज़ा की तरफ चली जाती है। भारत और चीन को बांटने वाली अंतर्राष्ट्रीय सीमा यहाँ से 18 किलोमीटर की दूरी पर थी। हमने वहां जाने की स्वीकृति लेने की कोशिश की लेकिन यह स्वीकृति रेकोंग पीओ मुख्य कार्यालय से ही मिलती थी जहाँ हम वापस जा नहीं सकते थे। सुम्डो से कुछ दूरी पर ग्यु नाम का एक स्थान है। इस जगह पर एक 500 साल पुरानी "ममी" है जो यात्रियों के आकर्षण का केंद्र बनी रहती है।

अब तक दोपहर का समय हो चुका था अतः हमने आगे की यात्रा शुरू कर दी। सुम्डो से 10 किलोमीटर की दूरी तक का पहाड़ी रास्ता काफी जटिल, ऊंचा और पथरीला था लेकिन इसके बाद हमारा सामना एक समतल रास्ते से हुआ जिसके दोनों तरफ छोटे-छोटे पत्थरों से बने हुए ऊंचे पहाड़ थे। मुझे इन पहाड़ों की चिकनाहट देखकर काफी आश्चर्य हुआ। इस रास्ते पर लगभग 20 किलोमीटर की दूरी तय करने के बाद हम ताबो पहुँच गए। ताबो से काजा 40 किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित था। स्थानीय लोगों के द्वारा हमें पता चला कि काजा पहुँचने का रास्ता बर्फ़बारी की वजह से बंद हो चुका था। अतः हमने अपनी यात्रा को ताबो तक ही सीमित करने का निश्चय किया। ताबो पहुँचते-पहुँचते शाम के पांच बज चुके थे। ताबो का तापमान शून्य (डिग्री) से भी नीचे जा चुका था। यहाँ हम पी डब्लू डी के विश्राम गृह में ठहरे। अत्यधिक निम्न तापमान की वजह से विश्राम-गृह में पानी के नलों में बर्फ जम चुकी थी। यात्रा की थकावट की वजह से रात कैसे गुजर गई, पता ही नहीं चला। सुबह हम सभी पास ही स्थित 1000 साल पुरानी मोनेस्ट्री देखने गए। भारतीय इतिहास के इस अनोखे धरोहर को देखकर हृदय काफी प्रसन्न हुआ। यहाँ स्थानीय लोगों से हमारी उनके जीवन, कला और संस्कृति के सन्दर्भ में काफी देर तक बातचीत हुई।

यद्यपि हमारी यात्रा काज़ा जाने के उद्देश्य से हुई थी लेकिन ताबो ही हमारी यात्रा का आखिरी पड़ाव बना। कहना न होगा कि इस यात्रा ने हमारे स्मृति-पटल पर एक गहन छाप छोड़ी थी। एक तरफ श्वेत पर्वत और दूसरी ओर घाटियां और हरे-भरे पेड़ पौधों के साथ शीतल समीर जब भी याद आता है, मुझे आज भी लगता है कि मैं मंत्र-मुग्ध होकर एक अनुपम प्राकृतिक सौन्दर्य को निहार रहा हूँ।

◆◆◆

बदलते परिप्रेक्ष्य में जीवन के लक्ष्य एवं उद्देश्य

राजेन्द्र सिंह
निदेशक कार्यालय

पिछले कुछ समय में भौतिक विज्ञान व बुद्धिवाद का जो विकास हुआ है उसने मानव जाति के हर पहलू को भले या बुरे रूप में प्रभावित किया है। लाभ यह हुआ कि वैज्ञानिक आविष्कारों से हमें बहुत सुविधा साधन मिले और हानि यह हुई कि विज्ञान के प्रत्यक्षवादी दर्शन से प्रभावित बुद्धि ने आत्मा, परमात्मा, कर्मफल एवं परमार्थ के उन आधारों को डगमगा दिया, जिन पर नैतिकता, सदाचरण एवं उदारता अवलम्बित थी। धर्म और अध्यात्म की अप्रामाणिकता एवं अनुपयोगिता विज्ञान ने प्रतिपादित की। इससे प्रभावित प्रबुद्ध-वर्ग ओछी स्वार्थपरता पर उतर आया। आज संसार का धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक नेतृत्व जिनके हाथ में है उन अधिकांश व्यक्तियों का आदर्श संकीर्ण स्वार्थों तक सीमित है। विश्व कल्याण को दृष्टि में रखकर उदार व्यवहार करने का साहस उनमें रहा नहीं, भले ही वे बढ़-चढ़कर बात उस तरह की करें। ऊँचे और उदार व्यक्तित्व यदि प्रबुद्ध वर्ग में से नहीं निकलते और उस क्षेत्र में संकीर्ण स्वार्थपरता व्याप्त हो जाती है, तो उससे नीचे वर्ग, कम पढ़े और पिछड़े लोग अनायास ही प्रभावित होते हैं। संसार में कथन की नहीं, क्रिया की प्रामाणिकता है। बड़े कहे जाने वाले जो करते हैं, जो सोचते हैं, वह विचारणा एवं कार्य पद्धति छोटे लोगों के विचारों में, व्यवहार में आती है।

इन दिनों कुछ ऐसा ही हुआ है कि आध्यात्मिक आस्थाओं से विरत होकर मनुष्य संकीर्ण स्वार्थों के कीचड़ में फंस गया है। बाहर से कोई आदर्शवाद की बात भले कहता दिखे, भीतर से उसका क्रिया-कलाप बहुत ओछा होता है। एक दूसरे में यह प्रवृत्ति छूत की बीमारी की तरह बढ़ी और अनाचार का बोलबाला हुआ। परिणाम सामने है रोग, शोक, कलह, क्लेश, पाप, अपराध, शोषण, अपहरण, छल, प्रपंच की गतिविधियाँ बढ़ रही हैं और इन परिस्थितियों को बदलने एवं सुधारने की आवश्यकता है। मानवता को प्यार करने वाले हर सजग एवं विवेकवान् व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह समय की समस्याओं को समझें और व्यक्ति एवं समाज को अवनति से रोक, प्रगति के लिए जो संभव हो सके, वह करें। विचार क्रान्ति अभियान एवं युग निर्माण योजना सजग आत्माओं की एक ऐसी ही क्रमबद्ध विचारणा तथा कार्य पद्धति है, जिसके आधार पर वर्तमान शोक संताप भरी परिस्थितियाँ बदला जाना संभव है।

व्यक्ति एक यंत्र है जो मान्यताओं व आस्था के ईंधन से गतिशील होता है। पिछले दिनों हमें अनास्था की प्रेरणा मिली उसे अपनाया गया और दुष्परिणाम देखा। अब मार्ग एक ही है कि विचार पद्धति को बदलें, आस्थाओं को पुनः परिष्कृत करें और लोगों को ऐसी गतिविधियाँ अपनाने के लिए समझाएं, जो वैयक्तिक एवं सामूहिक सुख शांति की स्थिरता में अनादिकाल से सहायक रही हैं और अंत तक रहेंगी। जनमानस की इसी परिवर्तन प्रक्रिया का नाम युग निर्माण योजना है।

कथित ऊंचे नेतृत्व से निराश होकर हम सीधे जन-सम्पर्क पर विश्वास करते हैं और सोचते हैं कि आज के तथाकथित बड़े लोगों से कुछ आशा करने की अपेक्षा जनता से काम लिया जाए, तो ऐसे नए व्यक्तित्व निकल सकते हैं, जो विश्व की परिस्थितियों को बदलें। इसी प्रकार जनता को अपने विचार एवं कार्य बदलने की प्रेरणा देकर वह वातावरण पैदा किया जा सकता है कि आगे बढ़ने वाले थोड़े से लोग पीछे वालों का पथ प्रदर्शन करें और अनुकरण के लिए उनका रास्ता साफ करें।

मूढ़ता और रूढ़ियों से ग्रस्त अनुपयोगी विचारों का ही आज सर्वत्र प्राधान्य है। आवश्यकता इस बात की है कि सत्य, प्रेम और न्याय पर आधारित विवेक एवं तर्क से प्रभावित हमारी विचार पद्धति हो। आदर्शों को प्रधानता दी जाए और उत्कृष्ट जीवन जीने की, समाज को अधिक सुखी बनाने के लिए अधिक त्याग, बलिदान करने की स्वस्थ प्रतियोगिता एवं प्रतिस्पर्धा चल पड़े। वैयक्तिक जीवन में शुचिता पवित्रता, सच्चरित्रता, ममता, उदारता, सहकारिता आए। सामाजिक जीवन में एकता और समता की स्थापना हो। इस संसार में एक राष्ट्र, एक धर्म, एक भाषा, एक आचार, एक जाति और लिंग के आधार पर मनुष्य-मनुष्य के बीच कोई भेदभाव न रहे। हर व्यक्ति को योग्यता के अनुसार काम करना पड़े, आवश्यकतानुसार गुजारा मिले। धनी और निर्धन के बीच की खाई पूरी तरह पट जाए। न केवल मनुष्य मात्र को वरन् अन्य प्राणियों को भी न्याय का संरक्षण मिले। दूसरे के अधिकारों को तथा अपने कर्तव्यों को प्राथमिकता देने की प्रवृत्ति हर किसी में पनपती रहे सज्जनता और सहृदयता का वातावरण विकसित होता चला जाए।

उपरोक्त परिवर्तन हेतु हम केवल अपनी सरकारों पर ही निर्भर रहना चाहते हैं। बेशक हमारी सरकारें इसमें एक निर्णायक भूमिका निभा सकती हैं लेकिन पहल हमें ही करनी होगी। एक समझदार नागरिक ही अपने सुविचारों एवं सुकर्मों से सरकारों का ध्यान हमारी ओर आमंत्रित कर सकता है। हमारे भारत जैसे विशाल एवं प्रबुद्ध देश की विडम्बना यह है कि हम लोग इतने स्वार्थी हो गए हैं कि बिना कर्म किए हुए अपनी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु दूसरों को ही दोष देते हैं। हम भौतिक एवं सांसारिक लक्ष्यों एवं उददेश्यों की पूर्ति हेतु इतने व्यस्त हो गए हैं कि हम खुद के आध्यात्मिक एवं आत्मिक लक्ष्यों एवं उददेश्यों को भूल ही गए हैं। हमें इन लक्ष्यों एवं उददेश्यों का पुनः निर्माण करना होगा ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वैयक्तिक जीवन में शुचिता, पवित्रता, सच्चरित्रता, ममता, उदारता, एवं सहकारिता आए और सामाजिक जीवन में एकता और समता की स्थापना हो। जीवन इतना भी कठिन नहीं है जितना हम इसको बना बैठे हैं। आज हमारी बेचैनी का कारण यही है कि हमारे जीवन के वास्तविक मूल्यों, लक्ष्यों एवं उददेश्यों का हनन हो चुका है। अगर आज हम इनमें सुधार नहीं करते हैं तो हम ही नहीं हमारी आने वाली पीढ़ियां भी हमारी ही भांति परेशान रहेंगी।

♦♦♦

द सीक्रेट......... द पावर

- रानू मुखर्जी
पी.एस.एस.-III

लेखकः रौंडा बायर्न

अधिकांश लोगों ने यह मुहावरा सुना होगाः 'सब कुछ तुम्हारे मन में ही बसता है' परन्तु क्या कभी किसी ने इसके महत्व और आशय को समझने की कोशिश की है। कुछ दिनों पहले तक मैं भी इसी ऊहापोह के दौर से गुजर रही थी तभी अचानक मुझे 'द सीक्रेट........ द पावर' की सौगात मिल गई।

मर्म शब्द में कोई रहस्य नहीं छुपा हुआ है। यह पुस्तक सरल शब्दों में बताती है कि तुम्हारे विचारों से ब्रह्मांड नियंत्रित होता है। इस 'आकर्षण के नियम' द्वारा आप अपनी इच्छाओं को 'व्यक्त' करते हैं। यह ठीक उसी तरह होता है जैसे कि आप कोई कैटेलॉग..... देखकर कोई आदेश देते हैं। आपको जानना ही होगा कि जब भी तुम चाहोगे वैसा तुम्हें अपने अंदर मिल जाएगा। अपने आपको विविधता में अनुभव करो और तुम उन पलों को अपनी ओर आकर्षित करोगे। यह हर समय हर व्यक्ति के साथ कार्य करता है।

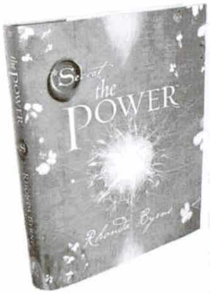

The Secret ..... The Power
by Rhonda Byrne

हरेक खोज, अविष्कार और मानव सृजनता केवल उसी शक्ति का फल है। उत्तम स्वास्थ्य, आश्चर्यजनक रिश्ते, तुम्हारा प्रिय पेशा, आनंद से भरा जीवन और जो तुम चाहो, सब कुछ शक्ति से ही आता है। कुछ भी सृजन करने के लिए, कुछ भी परिवर्तन करने के लिए केवल एक ही तत्व आवश्यक होगा, वह है 'शक्ति'।

बायर्न के अनुसार हमारा मस्तिष्क एक चुम्बक की तरह होता है, जोकि ब्रह्मांड से तरंगें प्राप्त करता एवं छोड़ता रहता है। प्रत्येक विचार एक संकेत भेजता है जोकि आकर्षण के विधान के कारण आपके पास वापस लौटने से पहले बदले में इसी प्रकार की तरंगे जमा करता है। बाकी की पुस्तक आपके लाभ के लिए आकर्षण के नियम को प्रयोग करने की विभिन्न पद्धतियों का विवरण स्पष्ट करती है। इसकी सबसे प्रमुख तकनीक है 'प्रश्न, विश्वास एवं ग्रहण करना' बायर्न बताते हैं कि 'अपने अद्भुत जीवन की कहानी सुनाना शुरू करो, और आकर्षण के नियम द्वारा यह सुनिश्चित होगा कि तुम उसे ग्रहण कर सको' ब्रह्माण्ड में सबसे बड़ी शक्ति, वह शक्ति है कि तुम जो चाहो उसे प्राप्त कर सकते हो।

बायर्न कहती हैं, 'शेक्सपियर, न्यूटन, लिंकन और आइंस्टाइन सभी को अपने आकर्षण के नियम को समझकर ही उपलब्धियां हासिल हुईं। वे कहती हैं कि क्वान्टम फिज़िक्स पर जटिल पुस्तकों को पढ़ा, मैं उन्हें अच्छी तरह समझ सकी क्योंकि मैं उन्हें समझना चाहती थी।

यह पुस्तक हमारे जीवन की इस अवधारणा को समझने एवं व्यवहार में लाने की विभिन्न बारीकियों एवं सहज सिद्धांतों का वर्णन करती है। जब मैं यह किताब पढ़ रही थी तो पूरे समय मैं बेसुध होकर उन बताए गए सिद्धातों को अपना समर्थन देती रही और यह महसूस करती रही कि सभी मायनों में ये बातें कितनी वास्तविक और उचित हैं। अगर आप अपने आपको खोजना चाहते हैं, अपनी वास्तविक जरूरतों और इच्छाओं को समझना चाहते हैं, हर संभव क्षेत्र में अपना जीवन सुधारना चाहते हैं और अप्रकट अपनी उस शक्ति का ईष्टतम स्वरूप प्राप्त करना चाहते हैं तो यह पुस्तक आपको अवश्य पढ़नी चाहिए।

♦♦♦

शिव कुमार शर्मा
प्रशासन

विचारों की शक्ति

हमारे विचारों से ही तय होता हैं कि हमारे शब्द और कार्य सकारात्मक हैं या नकारात्मक, लेकिन यह हमें कैसे पता चलेगा कि हमारे विचार सकारात्मक हैं या नकारात्मक। सकारात्मक विचार हमारी प्रिय चीजों के बारे में होते हैं और नकारात्मक विचार हमारी अप्रिय चीजों के बारे में होते हैं। यह पता लगाना बहुत सहज और आसान है। हम अपने जीवन में वही लाना चाहते हैं जिस वस्तु या व्यक्ति से प्रेम करते हैं। हम उसे कभी नहीं लाना चाहेंगे, जिसे हम प्रेम नहीं करते। व्यक्ति को हमेशा अपनी प्रिय वस्तुओं और प्रिय लोगों के बारे में ही बात करनी चाहिए। अधिकांश लोग अपनी प्रिय वस्तुएं और प्रिय लोगों के बारे में बात करने के बजाए अप्रिय वस्तुओं और लोगों के बारे में ज्यादा सोचते और बोलते हैं, जिससे ऐसा बोलने वाले उस व्यक्ति के जीवन में अप्रिय घटनाएं घटती रहती हैं।

इसका मुख्य कारण है कि एक ऐसी अदृश्य शक्ति जो कभी दिखाई नहीं देती, लेकिन इस ब्रह्मांड में मौजूद है, जैसे पृथ्वी पर गुरूत्वाकर्षण की वजह से हम लोग सीधे खड़े होते हैं और कारें सड़क पर चलती हैं परंतु गुरूत्वाकर्षण दिखाई नहीं देता, गुरूत्वाकर्षण मौजूद रहता है, ठीक इसी तरह विचार और भावनाओं की तरंगें कार्य करती हैं।

हमारे सकारात्मक और नकारात्मक कार्य वैसे ही परिणति करते हैं, जैसा कार्य किया जाता है, जैसे कि मिट्टी में बीज को बोया और पानी डाला गया। मिट्टी का कार्य है उस बीज को उगाना, हम जैसा बीज डालेंगे वैसा ही फल मिलेगा, भूमि का कार्य है, पोषक तत्वों को उपजाऊ करना। ऐसे ही हमारे अच्छे या बुरे विचार जीवन में फलित होते हैं और इनका उदय हमारे मन से ही होता है और मन का प्रबल नियंत्रण पूरी तरह हमारी भावनाओं के ऊपर है।

हम जिसे पसंद करते हैं, जीवन में लाना चाहेंगे, उसका एक ही कारण होता है जब हमारे अंदर उस वस्तु से या व्यक्ति के प्रति प्रेम होता है। प्रेम का अर्थ वासनात्मक नहीं है। प्रेम का अर्थ योगात्मक है। हमारे मन में जो भी बनने, करने पाने की प्रबल इच्छा है, यह प्रेम की वजह से ही उत्पन्न होती है। जीवन में कुछ भी संयोगवश नहीं होता। हम जैसी भावनाएं रखतें हैं उसी के आधार पर हमें जीवन में हर रोज परिणाम मिलता है। हमारी भावनाएं और विचार अच्छे हों या बुरे उतनी ही सटीकता से अपने आप हमारी ओर लौटेंगे, जैसे पहाड़ी इलाकों में शब्दों की गूंज लौटती है। हमारी अपनी प्रिय चीजों के बारे में सोचने और बोलने की अपार क्षमता है। इसलिए हम अपने जीवन की हर अच्छी चीज के बारे में सोचें, अपनी प्रिय वस्तुओं और लोगों से प्रेम करें। जब हम प्रेम करते हैं तो हम सृष्टि की सबसे प्रबल और महानतम उर्जा का इस्तेमाल कर रहे होते हैं। प्रेम कमजोर, नाजुक या कोमल नहीं होता। प्रेम तो जीवन की सकारात्मक शक्ति है। इसे प्रेम की शक्ति कहें या सकारात्मक विचारों की शक्ति, यह हमेशा कार्य करती रहती है। प्रेम ही हर सकारात्मक और अच्छी चीज का बुनियादी कारण है।

◆◆◆

अनूठे लमहे

- अजय पाल
सामग्री प्रबंधन

मशरूफ थे सब अपनी-अपनी जिंदगी की उलझनों में,
जरा सी ज़मीन क्या हिली, कि सबको खुदा याद आ गया।

मरने वालों ने भी क्या खूब जगह पाई है,
भीड़ की भीड़ है, तन्हाई की तन्हाई है।

मुकाम वो चाहिए कि, जिस दिन भी हारूं,
जीतने वाले से ज्यादा चर्चे हो मेरी हार के।

वाह रे जिंदगी भरोसा तेरा एक पल का भी नहीं,
और नख़रे तेरे मौत से भी ज्यादा।

सफ़र का मजा लेना हो तो सामान कम रखिए,
ज़िदंगी का मजा लेना हो तो अरमान कर रखिए।

कभी किसी की मजबूरियों पर मत हंसिए,
कोई मजबूरियां खरीद कर नहीं लाता,
डरिए वक्त की मार से क्योंकि बुरा वक्त,
किसी को बताकर नहीं आता।

इस कदर आदी हुआ चलने का कि,
आराम से बैठूं तो थकान होती है।

वो मेरे चेहरे तक अपनी नफरतें लाया तो था
मैंने उसके हाथ चूम लिए और बेबस कर दिया।

गलतफहमियों के सिलसिले आज इतने दिलचस्प हैं,
कि हर ईंट सोचती है कि दीवार उसी पर टिकी है।

क़िस्मत और पत्नी भले ही परेशान करती है,
लेकिन जब साथ देती हैं, तो जिंदगी बदल देती है।

जिंदगी में इतनी शिद्दत से निभाना अपना किरदार,
कि परदा गिरने के बाद भी तालियां बजती रहें।

मैं शतरंज नहीं खेलता क्योंकि दुश्मनों की कोई चाल हमारे आगे चलती नहीं,
और दोस्तों के आगे हम चलते नहीं।

रुपए की कीमत कितनी भी गिर जाए, पर उतनी नहीं गिर सकती,
जितना इंसान रुपए के लिए गिर जाता है।

जो तुम्हारे लिए सब कुछ हैं, उनके लिए जीना छोड़ो,
उनके लिए जियो, जिनके लिए तुम सब कुछ हो।

◆◆◆

जीवन एक उपहार है

- अनिल कुमार
मानव संसाधन

"जब आप पैदा हुए तो केवल आप रो रहे थे और सारी दुनियां आपको देख कर हंस रही थी। अपने जीवन को ऐसा बनाएं कि जब आप इस संसार से जाएं तो केवल आप हंस रहे हों और सारी दुनिया आपको देखकर रो रही हो।"

जब हम इस दुनियां में आए उस समय हमारा कोई भी पक्का लक्ष्य नहीं था, कुछ एक लोगों को हम पहचान पाते थे वो भी ना जाने कैसे। रिश्तों के मायने, माँ के उस प्यार भरे एहसास में महसूस होते थे। कोई काम का तनाव नहीं लेते थे हम उस समय में, कुछ चाहिए तो रो दिए, कुछ अच्छा लगा तो हंस दिए। बस यहीं तक ही जीवन का अर्थ हम समझ पाते थे।

पर आज की कहानी कुछ और ही है। आज हम 24 में से 18 घन्टे काम करने की कोशिश में लगे रहते हैं, हर दिन। फिर भी पीछे रह जाने की चिन्ता और डर 24 घन्टे हमारे साथ ही रहते हैं। चाहे रोएं या हंसें मन की शांति की ख़ोज कुछ अधूरी सी ही लगती है। रिश्तों के मायने एक दूसरे की शादी-ब्याह, बर्थडे आदि आयोजनों में जाने तक ही सिमट कर रह गए हैं। उसमें भी जाने से पहले मन दो बार सवाल करता है – क्या सच में जाना ज़रूरी है! आजकल क्यों लोग एक दूसरे का दुःख नहीं बांट पाते! क्या सचमुच समय की कमी है! या इच्छाशक्ति की कमी है! क्या बड़े-बूढ़ों की अहमियत हम भुला रहे हैं! क्या जो मिनटों में घर की बड़ी से बड़ी समस्याओं को सुलझा दिया करते थे वो आज एक पुराने और फालतू सामान की तरह कोने में पड़ी टूटी खाट पर सिमट कर रहने को मजबूर हैं!

हर दिन हमारे लिए नई ऊंचाइयों को छूने का अवसर है। पर उन ऊंचाइयों का सही अर्थ और सार्थकता तब ही है – जब हम अपने घर-परिवार की खुशी और ज़रुरतों को भी सफ़लता का एक आधार बनाएं। पैसा कमाना अच्छी बात है पर अगर हम उसका उपयोग अपने जीवन को खुशहाल बनाने में नहीं करेंगे तो उसका होना या न होना बराबर है क्योंकि जब वो नहीं था तब भी हम दुखी थे, जब है तब भी हम दुखी हैं।

परमात्मा ने ये जीवन हमें ख़ुशी से जीने के लिए दिया है, अगर वो चाहता तो हमको दुखी रहना सिखा कर भेजता, पर ऐसा नहीं है। जब बच्चा पैदा होता है तो उसे इस बात की चिन्ता नहीं होती कि कौन उसे खाना खिलाएगा? कैसे समाज में नाम कमाएगा? आदि आदि.. वो तो अपने स्वभाव में खुश रहता है, उसका रोना या चिल्लाना भी पल दो पल का होता है, और वो भी ज़रूरत का एहसास कराने के लिए। पर आज तो हम इस संसार में रहकर न जाने क्या-क्या नए गुण सीख रहे हैं। आज अगर किसी ने कुछ कह भी दिया तो सालोसाल हम नहीं भूलते, बोलना भी बंद कर देते हैं। पर याद कीजिए, बच्चे ऐसा नहीं करते – वो तो निश्छल भाव से अपनी मांग रख देते हैं, चाहे कोई पूरा करे या न करे। अगर हमने मांग पूरी नहीं की, तो भी उनका रूठना कुछ समय का ही होता है, फिर वो भूल जाते हैं उस घटना को।

कितना अच्छा हो अगर हम भी इस जीवन को एक उपहार की तरह जानकर ख़ुशी से जिएं? समस्या और परेशानी तो इस जीवन का अभिन्न अंग है, ये तो आनी ही आनी है, क्यों न समस्याओं के बीच भी मुस्कुराने का फैसला करें! अपनी जिम्मेदारियों से मुह मोड़ लेना बहुत आसान है पर क्यों न हम उनका सामना करने का फैसला करें ! अपने घर-परिवार, माता-पिता आदि को क्यों न आज से वह प्यार और सहकार दें जो उन्होंने हमेशा हमें दिया? अगर हम ये कर पाएं तो पैसा भले ही कम या ज्यादा हो जाए, शांति और ख़ुशी जीवन में कम नहीं होगी।

♦♦♦

परिपक्वता

राजेन्द्र सिंह
निदेशक कार्यालय

- यदि आपने औरों को सुधारने की कोशिश करने के बजाय अपने आप को सुधारने की कोशिश शुरू कर दी है तो आप परिपक्व हैं।
- यदि आपने सभी मनुष्यों एवं अन्य प्राणियों को उनके यथास्वरूप में स्वीकार करना शुरू कर दिया है तो आप परिपक्व हैं।
- यदि आप ये मानने लगे हैं कि संसार का प्रत्येक व्यक्ति एवं प्राणी अपने खुद के परिप्रेक्ष्य में बिल्कुल सही है तो आप परिपक्व हैं।
- यदि आप "छोड़ो जाने दो" यानि त्याग की अवस्था में पहुंच गए हैं तो आप परिपक्व हैं।
- यदि आपकी सांसारिक सम्बन्धों से उम्मीद समाप्त हो गई हो और आपने वस्तुओं का दान केवल दान की खातिर करना शुरू कर दिया है तो आप परिपक्व हैं।
- अगर आप ये समझ चुके हैं कि जो भी आप कर रहे हैं केवल अपनी निजी शान्ति एवं खुशी के लिए कर रहे हैं तो आप परिपक्व हैं।
- अगर आपने लोगों के सामने यह साबित करना छोड़ दिया है कि आप समझदार एवं बुद्धिमान हैं तो आप परिपक्व हैं।
- यदि आपने लोगों के कदमों में अपने अहंकार का सर्मपण कर दिया है तो आप परिपक्व हैं।
- यदि आपने लोगों से अपनी तुलना छोड़कर केवल अपने आपसे अपनी तुलना करना शुरू कर दिया है तो आप परिपक्व हैं।
- यदि आप अपने आपसे एवं अपने साथ खुश हैं तो आप परिपक्व हैं।
- यदि आपने "आवश्यकता" एवं "चाहत" के अन्तर को समझ लिया है एवं "चाहत" का त्याग कर चुके हैं तो आप परिपक्व हैं।
- यदि आपने अपने जीवन के वास्तविक सुखों को भौतिक सुखों से संलग्न करना छोड़ दिया है तो आप परिपक्व हैं।
- यदि आप किसी कष्टदायक एवं संस्कारपूर्ण दूरगामी परिणाम हेतु अपनी तत्काल खुशी का त्याग करने में सक्षम हैं तो आप परिपक्व हैं।

आपको परिपक्व जीवन की बहुत बहुत बधाइयॉं

♦♦♦

माँ - माँ ही होती है

पुनीत सिंह
डिजाइन एंड डेवेलपमेंट

बालकनी में टहलते हुए राधिका के चेहरे पर चिंता की लकीरें साफ झलक रही थीं। रह-रह कर उसकी नजरें गली पर जातीं और फिर हाथ पर पकड़े मोबाइल पर। मोबाइल वाला हाथ ऊपर करती, पर फिर से नीचे कर लेती। नहीं, फोन नहीं करता! मेट्रो में भीड़ होगी - कैसे फोन निकालेगी पर्स से या हो सकता है, सड़क क्रास कर रही हो। रोज 4 बजे तक घर आ जाने वाली उसकी बेटी ने 5 बजा दिए। इतनी लापरवाही क्यों! कहा भी है कि फोन कर दिया कर। मन में रह-रहकर गलत विचार भी उठते हैं। टहलते-टहलते राधिका खो गई अपने अतीत में, जब वह भी कॉलेज की छात्रा थी।

उस वक्त मोबाइल भी नहीं होते थे। सुबह की कॉलेज गई राधिका जब शाम को घर लौटती थी तो मां के चेहरे पर चमक आ जाती थी। मां को वह अक्सर दरवाजे पर ही खड़ा पाती थी। नाराज भी होती थी वह मां से कि क्यों इतनी चिंता करती हो? पर मां कुछ न कहती, बस हौले से मुस्करा देती- शायद कह रही हो कि जब तू मां बनेगी तो जानेगी कि जब तक बेटी घर ना आए, तब तक मां पर क्या बीतती है!

अचानक उसकी नज़र गली में आती हुई अपनी बेटी पर पड़ी। भागकर सीढ़ियां उतरकर राधिका मेन दरवाजे पर पहुंच गई। तब तक बेटी भी दरवाजे तक पहुंच चुकी थी। राधिका ने फटाफट दरवाजा खोला और बेटी को सीने से लगा लिया।

'क्या हुआ मां?' बेटी ने धीरे से कहा।
'इतनी लेट क्यों हो गई?' राधिका की ममता भरी आवाज बेटी के कानों में पड़ी।
'उफ मां, व्यर्थ चिंता करती हो - एक पीरियड एकस्ट्रा लग गया।'
'फोन भी नहीं किया!' राधिका ने नाराजगी से कहा।
'मां- बैटरी खत्म हो गई थी' पर क्या हुआ?'
'कुछ नहीं.....।' बाकी शब्द राधिका ने मन में बोले- इसका जवाब तो तुझे तब मिलेगा, जब तू मां बनेगी और उसने तेजी से उसे भींच लिया मानो उसे सभी बुरी नज़रों से दूर कर दिल में छुपा रही हो।

◆◆◆

नीरू शर्मा
पुस्तकालयाध्यक्ष

माँ ने सिखाया

मैंने माँ से सीखा है, सबकी मदद करना।
एक दिन देखा छोटे से पप्पी को,
जख़्मी था, चल नहीं पा रहा,
माँ का सबक याद आया,
पहुँच गई मदद करने को।
मैंने माँ से सीखा है, सबकी मदद करना।

एक दिन देखा गरीब को,
भूखा, बिलखता हुआ,
तभी माँ का सबक याद आया,
दे दिया उसे अपने खाने को।
मैंने माँ से सीखा है, सबकी मदद करना।

एक दिन देखा एक बुढ़िया को,
सड़क नहीं कर पा रही थी पार,
तब माँ का सबक याद आया,
हाथ पकड़ उसका करा दिया पार।
मैंने माँ से सीखा है, सबकी मदद करना।

एक दिन देखा बच्चे को,
बिछड़ा गया जो अपनी माता से
तब माँ का सबक यादा आया,
मिला दिया उसकी माता से.
मैंने माँ से सीखा है, सबकी मदद करना।

♦♦♦

उंगलियों में रिश्ता

- भुबन दास
एस.एन.एल.पी

रिश्ता शब्द से हम सब वाकिफ हैं, यह ऐसा शब्द है जो सबको एक साथ मोतियों की तरह ही पिरो के रखता है, रिश्ता बहुत ही नाजुक धागे से बन्धा हुआ होता है, इसमें जरा सा भी खीचतान होती है तो पल भर में ही बिखर जाता है, कुछ रिश्ते तो जन्म के साथ होते हैं, तो कुछ हम अपनी पसन्द से बनाते हैं, यहां हम जन्मों से सम्बन्धित रिश्तों को समझेंगे। जैसे कि माता-पिता, भाई-बहन, स्वामी-स्त्री, पुत्र-पुत्रियां, और स्वयं।

हमारे हाथ में पाँच उंगलियां होती हैं, और इनका नाम भी होता है, जैसे- (1) वृद्धा या अंगूठा- यह उंगली- माता-पिता को दर्शाती है, (2) तर्जनी- यह उंगली भाई-बहन जैसी होती है, (3) मध्यमा- यह स्वयं को समझने के लिए होती है, (4) अनामिका- यह उंगली स्वामी-स्त्री को दर्शाती है और अंतिम में (5) कनिष्ठ उंगली होती है, जो कि पुत्र-पुत्रियों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

चित्र-1

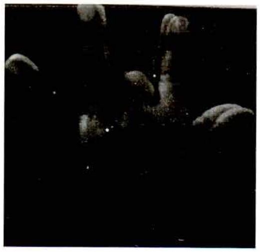

चित्र-2

आइए अब हम इसको चित्रों के माध्यम से समझते हैं। सबसे पहले अपने दोनों हाथों को नमस्कार मुद्रा में यानी चित्र-1 की तरह रखिए, उसके बाद चित्र-2 की तरह बीच की उंगली को नीचे की तरफ मोड़ लीजिए, बाकी की उंगलिओं को सीधा ही रखिए। अब सबसे पहले वृद्धा उंगली को अलग कीजिए, जो कि बड़ी असानी से अलग हो जाती है, उसके बाद तर्जनी, और कनिष्ठा को भी ऐसा ही कीजिए, वह भी अलग हो जाती है, लेकिन अनामिका को अलग करने की कोशिश कीजिए, पर यह आसानी से अलग नहीं होती है, हमने उपर बताया है अनामिका स्वामी-स्त्री का प्रतिनिधित्व करती है, जो कि हम लाख कोशिश करें कि एक-दूसरे से अलग हो जाएं पर नही होतीं। समय के साथ माता-पिता, भाई-बहन, पुत्र-पुत्रियां सब अपने से अलग हो जाते हैं, लेकिन पति-पत्नी का रिश्ता ही लम्बे वक्त तक चलता है, जो कि जीवन के उतार-चढ़ाव में एक दूसरों का साथ देता है। इस मधुर रिश्ते का बड़े जतन से लालन-पालन करना चाहिए, ताकि हमारे रिश्तों में और मिठास घुल जाए। जब तक साथ रहें-खुश रहें और एक दूसरों के लिए आदर भाव रखें।

♦♦♦

अनमोल बूंद

- रजत
एम. टैक (आई.टी.)

धरती फाड़ बीज अंकुर
ले सिर पर बूंद पानी की,

स्वागत करती कोमल कल
सुबह की पहली किरणों की,

मोती सी चमकती बूंद
उतावली स्पर्श पाने चरणों का,

अंदाज निराला ऊर्ज स्रोत
सूरज को जल चढ़ाने का,

बीजों में अंकुरण कर
विशाल वृक्ष बनाने का,

जड़ से तना फूल पत्ती फल
व पेड़ की चोटी तक जाने का

जल पौधे में लावण्य लाए
जल बिना पौधे मुरझाए,

खट्टा, मीठा, तीखा, कड़वा
सौगात रसीले फलों की लाए,

यह प्रकृति की सीख
मिसाल देती मनुष्य को,

सुधारो संभालो हर बूंद
उज्ज्वल करो भविष्य को,

इसको संवारोगे
सुधार देगी जिंदगी तुमारी,

सूखा गला तर कर देगी
यह है जिंदगी हमारी, तुम्हारी।

♦ ♦ ♦

नन्ही मुस्कान

- राहुल यादव
ई-गवर्नेंस

आज सोचा क्या लिखूं भरी कलम से
तभी बचपन के वो दिन याद आए
जब हम दौड़ा करते थे
जब हम खेला करते थे
एक भोंपू की आवाज पे
हम मम्मी को मनाते थे
लेकर पैसा हम
कभी आइसक्रीम तो कभी रस मलाई खाते थे
उड़ती चिड़ियां गिनते थे
नीचे बंदर चिढ़ाते थे
और पापा को देखकर
हम पढ़ने बैठ जाते थे।

होता सवेरा चिड़िया बोलतीं
मम्मी हमको जगाती थीं
अपने पास बैठकर वो हमको सहलाती थीं
पुचकार कर धीरे-धीरे वो हमको
स्कूल के लिए उठाती थीं
पर स्कूल के नाम पर
हम भी सौ नखरें बतलाते थे
कभी यहां दर्द तो कभी वहां दर्द
हम उनको गिनाते थे।

पर कभी नरम से तो कभी गरम से
स्कूल तो जाना पड़ता था
पर बिना बाबा से पैसा लिए
हम नहीं जाते थे
स्कूल पहुंचकर अपनी दादागीरी वहां भी दिखलाते थे
फर्स्ट बेंच पर बैठकर
सबको चिड़िया उड़ खिलाते थे

लास्ट पीरियड की बेल पर हम
भाग के घर को आते थे
और कपड़े फेक कर
सबसे पहले खेलने को जाते थे
पर मम्मी पकड़-पकड़ के
हाथों से लड्डू बना के हमको खाना खिलाती थीं

समय बदल गया है
आज हम मम्मी की जगह अलार्म पर उठते है
और बैग उठाकर बिन नखरे के
स्कूल की जगह ऑफिस को आते है।

♦♦♦

ख़्वाहिश

राजेन्द्र सिंह
निदेशक कार्यालय

(एक मध्यमवर्गीय व्यक्ति जीवन में हमेशा भ्रमित ही रहता है। ऐसे ही एक ग्रामीण भारतीय बुजुर्ग व्यक्ति की ख़्वाहिशों को कुछ छन्दों के माध्यम से दर्शाने की कोशिश।)

विदेशों में आज तक़ भारत में अब तक।
जो नहीं हुआ होगा, ये बताना चाहता हूँ मैं।।

दुनियां का हर देश, भयभीत जिससे है।
आतंक को प्यार से, हराना चाहता हूँ मैं।।

भ्रष्टाचार छा गया है, मेरी दुनियां में पूरी।
फिर से यहां राम-राज़ लाना चाहता हूँ मैं।।

सती-प्रथा पति-प्रथा, प्रथाओं का अन्त कर।
ब्याह सभी विधवाओं का, रचाना चाहता हूँ मैं।।

गांव का जीवन मेरा, बड़ा ही दुर्लभ रहा।
अब काशी घाट पर, जाना चाहता हूँ मैं।।

बाकी का जीवन अब, शिव की शरण जाके।
भजन कीर्तन में, बिताना चाहता हूँ मैं।।

पाप पुण्य जो भी किए, सबको भुलाके अब।
डुबकी रोज गंगा में, लगाना चाहता हूँ मैं।।

जवानी की उम्र में ही, बूढ़ा दिखने लगा हूँ।
पुनः अपने यौवन को, पाना चाहता हूँ मैं।।

अंतिम इच्छा है मेरी, जीवन में एक बार।
नन्हीं कलियों को गोद में, उठाना चाहता हूँ मैं।।

♦♦♦

समझौता

- पुनीत सिंह
डिजाइन एण्ड डेवेलपमेंट

जिंदगी.........
गम का दरिया!
आंसुओं का समंदर!
या मौत की घाटी!

जिंदगी......
फूलों की सुगंध!
भंवरों की गूंज!
या कलियों की मुस्कराहट!

जिंदगी......
प्यार का तराना!
मीठा सुहाना सफर!
या झरनों का मधुर संगीत!

जिंदगी.....
एक नाटक है जिसे
हर राह पर, हर मोड़ पर
हर इंसान को खेलना पड़ता है।

जिंदगी.....
एक कंटीला पथ है
जिसकी हर राह पर, हर मोड़ पर
हर इंसान को चलना पड़ता है।

जिंदगी.......
एक तड़प है जिसे
हर राह पर, हर मोड़ पर
हर इंसान को सहना पड़ता है।

जिंदगी.....
सुख-दुख का संगम है
जिसकी हर राह पर, हर मोड़ पर
हर इंसान को सामना करना पड़ता है।

जिंदगी.....
एक हादसा है जो
हर राह पर, हर मोड़ पर
हर इंसान के साथ हो सकता है।

जिंदगी.....
परिश्रम है जिसके लिए
हर राह पर, हर मोड़ पर
हर इंसान को तैयार रहना पड़ता है।

जिंदगी.....
एक समझौता है
जिसे हर राह पर, हर मोड़ पर
हर इंसान को करना पड़ता है।

अन्ततः जिंदगी......
सुख के सागर में डूबो नहीं
दुख को दिल से लगाओ नहीं
फूलो की सुगंध में खोओ नहीं
कांटों की चुभन से तड़पो नहीं
हर पल को ईश्वर की अनमोल देन
समझ समझौता कर आगे बढ़ते चलो
समझौता-सिर्फ समझौता
और कुछ नहीं - और कुछ नहीं।।

♦♦♦

कंप्यूटर जी

- डॉ. किरन शुक्ल
परामर्शकार

मैं और मेरा कंप्यूटर
अक्सर ये बातें करते हैं
कि तुम न होते तो तुमसे
बातों का ये सिलसिला
यूं ही समा जाता
अतीत की उन गहराइयों में
जिनमें गोते लगाते ही
बातों-बातों में ही
बिना कुछ कहे
एक ही क्लिक में
मनचाहा अपार संसार
आंखों के सामने तैरता-मंडराता
फिक्र तो यही है कि तुमसे दूर होने के बाद
उन्ही अतल-अबूझ पहेलियों में खो जाता मैं
अपनी ही तनहाईयों के साथ
सिलसिले वार - रोज - बरोज
तुम न तोड़ना यू रोज रूठने
मनाने का मंजर
तुम्हारा अथाह संसार हमारे साथ-साथ
बढ़ता समाता जाएगा
हमारा तुम्हारा प्यार यूं ही
बन अटल विश्वास की धरोहर
युगों-युगों तक मुस्कुराएगा।

◆◆◆

वर्ष 2015 में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में सी-डैक, नोएडा की उपलब्धियां

सी-डैक, नोएडा से संबंधित सभी सामग्री को सी-डैक की वेबसाइट में सम्मिलित करने हेतु हिन्दी में भी अनूदित कर भेजा गया है तथा इसे समय-समय पर अद्यतन किया जाता है।

यह केन्द्र अन्य कार्यालयों के द्वारा हिन्दी में किए जाने वाले कार्यो को सरल एवं सुगम बनाने के लिए वांछित सॉफ्टवेयर टूल्स का विकास भी कर रहा है। जैसेः भारतीय भाषाओं के लिए अंग्रेजी से भारतीय भाषा में मशीनी अनुवाद, भारतीय भाषाओं में परस्पर मशीनी अनुवाद, स्पीच से स्पीच अनुवाद, ऑपटिकल कैरेक्टर रिकग्नेशन (ओ.सी.आर.) आदि। संघ की राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं अधिकारियों/कर्मचारियों में हिन्दी में रचनात्मक सृजन को बढ़ाने हेतु हिन्दी दिवस, 2015 के अवसर पर सी-डैक, नोएडा द्वारा 01 से 14 सितम्बर 2015 तक हिन्दी पखवाड़ा आयोजित किया गया। अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने की प्रेरणा देते हुए कार्यकारी निदेशक महोदय द्वारा एक संबोधन-पत्र जारी किया गया तथा यह सुझाया गया कि हिन्दी की निरन्तरता को इस दौरान और अधिक समृद्ध किया जाए।

हिन्दी पखवाड़े के दौरान हिन्दी निबंध, हिन्दी नोटिंग/ड्राफ्टिंग, हिन्दी कविता, हिन्दी भाषण, हिन्दी टाइपराइटिंग एवं डिजिटल इंडियाः हिन्दी में पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इससे कार्मिकों में सरकारी कामकाज में टिप्पण एवं आलेखन तथा मौलिक लेखन के प्रति रूचि जागृत हुई। इन प्रतियोगिताओं में ई-गवर्नेंस में आई.टी. की भूमिका, सूचना प्रौद्योगिकी विषयक कार्यालय के कार्य से जुड़े विषय रखे गए। इससे अधिकारियों/कर्मचारियों को देश की आई.टी. नीति के संबंध में अपने विचार रखने का अवसर मिला। प्रशिक्षण विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने भी इन प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। कुल मिलाकर 118 प्रतिभागियों की भागीदारी रही। इतनी बड़ी संख्या में प्रतियोगिताओं का भाग लेना सी-डैक, नोएडा में हिन्दी के प्रति बढ़ती हुई लगन का स्पष्ट परिचायक है।

उपर्युक्त के अलावा किए जा रहे विशेष कार्य निम्नवत हैः

- सी-डैक, नोएडा की राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन किया गया है तथा समिति की बैठकें नियमित रूप से आयोजित की जा रही हैं।
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की छमाही बैठकों में नियमित रूप से भाग लिया जाता है।
- हिन्दी की शैक्षिक योग्यता से संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों का रोस्टर तैयार किया जाता है।
- इस समय सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान एवं प्रवीणता प्राप्त है।
- वर्ष में चार हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है।
- यह कार्यालय राजभाषा नियम 10 (4) के अन्तर्गत अधिसूचित है।
- राजभाषा नियम 1976 के नियम 8(4) के अन्तर्गत सी-डैक, नोएडा में प्रवीणता प्राप्त व्यक्तियों को कार्यकारी निदेशक महोदय के हस्ताक्षर से जारी एक पत्र द्वारा हिन्दी में काम करने के लिए विनिर्दिष्ट किया गया है, जिनको केवल हिन्दी में समूचा कार्य करना है।
- हिन्दी में नोटिंग/ड्राफ्टिंग करने के लिए राजभाषा विभाग की नकद पुरस्कार योजना सी-डैक में भी लागू की गई है। साथ ही, प्रतिभागियों को इसमें भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
- हिन्दी में कार्य करने की प्रेरणा हेतु सूक्ति पट्टिकाएं प्रदर्शित की गई हैं एवं स्वागत कक्ष के पट्ट पर प्रतिदिन एक द्विभाषी शब्द लिखा जाता है।
- धारा 3(3) के अन्तर्गत सभी कागजात द्विभाषी रूप में जारी किए जा रहे हैं। ज्यादा से ज्यादा पत्राचार हिन्दी में करने के प्रयास किए जा रहे हैं। पहले की तुलना में 8 प्रतिशत की प्रगति हुई है, एवं मार्च तिमाही 2016 में 'क' क्षेत्र को 81.15 प्रतिशत मूल पत्र हिन्दी में भेजे गए हैं।
- सभी फार्म द्विभाषी रूप में उपलब्ध हैं और प्रचलन में लाए जा रहे हैं।
- सभी विज्ञापन द्विभाषी रूप में जारी किए जा रहे हैं।
- वर्ष में एक बार विभिन्न विभागों/स्कूलों का हिन्दी निरीक्षण किया जाता है।
- वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'अभिव्यक्ति' का सातवां अंक प्रकाशित हो चुका है तथा सभी लेखकों को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया है तथा आठवें अंक के प्रकाशन की प्रक्रिया चल रही है।
- ज्यादा से ज्यादा पत्राचार हिन्दी में करने के प्रयास किए जा रहे हैं। पहले की तुलना में काफी प्रगति हुई है।

◆◆◆

राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम 2016-17 में अनुकरणीय प्रमुख बातें

प्रमुख लक्ष्य

क) हिन्दी में मूल-पत्राचार लक्ष्य के अनुसार 'क' से 'क' क्षेत्र के लिए 100%, 'क' से 'ख' क्षेत्र के लिए 100% तथा 'क' से 'ग' क्षेत्र के लिए 65% होना चाहिए।

ख) हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिन्दी में ही दिया जाना चाहिए।

ग) फाइलों पर 75% टिप्पण हिन्दी में किया जाना चाहिए।

घ) अधिकारियों द्वारा 65% डिक्टेशन हिन्दी में ही दिया जाना चाहिए।

ङ) वेबसाइट शत-प्रतिशत द्विभाषी रूप में होनी चाहिए।

पृष्ठ 2
केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग द्वारा 2015-16 में 'पारंगत' नामक प्रशिक्षण कार्यक्रम आरंभ किया गया है। सभी मंत्रालय विभागों व उसके कार्यालय के हिन्दी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त व्यक्ति 20 कार्यदिवसों (160 घंटे) में अथवा एकांतर दिवसों में डेढ घंटे (5 माह में) यह कार्यक्रम पूरा करेंगे।

पृष्ठ 4-1
धारा 3(3) के अन्तर्गत जारी सभी कागज़ात द्विभाषी जारी किए जाएं। उल्लंघन के लिए हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी की जिम्मेवारी होनी चाहिए।

पृष्ठ 4-3
वैज्ञानिकों को राजभाषा हिन्दी में विभाग के विषय से संबंधित शोधपत्र पढ़ने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया जाए।

पृष्ठ 5-11
विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों का यह संवैधानिक दायित्व है कि वह अपने सरकारी कामकाज में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करें इससे राजभाषा नीति के अनुपालन में गति मिलेगी और अधीन कर्मचारियों को प्रेरणा मिलेगी।

पृष्ठ 6-12
हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने वाली विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं का लाभ उठाया जाए।

पृष्ठ 6-14
प्रशासनिक प्रधानों द्वारा ली जाने वाली प्रत्येक बैठकों में हिन्दी की प्रगति का एक बिन्दु भी शामिल किया जाए।

पृष्ठ 6-19
हिन्दी में अपने विभाग से संबंधित शब्द भंडार को समृद्ध बनाया जाए।

पृष्ठ 7-21
विभाग से संबंधित पत्रिका में राजभाषा संबंधी आलेख प्रकाशित किए जाएं।

पृष्ठ 7-23
सभी विभाग वार्षिक कार्यक्रम की अनुपालन रिपोर्ट भिजवाना सुनिश्चित करें।

♦♦♦

सी-डैक, नोएडा में हिन्दी पखवाड़ा-2015 का आयोजन एवं घोषित पुरस्कार

सी-डैक, नोएडा में दिनांक 01-14 सितम्बर 2015 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। इस अवसर पर हिन्दी निबंध, नोटिंग/ड्राफ्टिंग, कविता, भाषण, टाइपराइटिंग एवं डिजिटल इंडियाः हिन्दी में पावर प्वाइंड प्रेजेंटेशन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में कुल 82 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया, साथ ही प्रतियोगिताओं का निर्णय 'स्थल पर ही' एवं इसके लिए गठित मूल्यांकन समिति द्वारा किया गया।

साथ ही, इस अवसर छात्रों के लिए हिन्दी निबंध एवं भाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में छात्र/छात्राओं नें बढ़-चढ़कर भाग लिया।

सी-डैक, नोएडा के अधिकारी एवं

प्रतियोगिताओं के नाम	विजेता का नाम, पदनाम, विभाग	पुरस्कार की राशि
हिन्दी निबंध प्रतियोगिता		
प्रथम पुरस्कार	सुश्री मेघा गर्ग, परियोजना अभियंता-II, बी.डी.पी.एम.	रु. 1100.00
द्वितीय पुरस्कार	श्री धर्मेन्द्र कुमार शर्मा, परियोजना अभियंता-I, सिस्टम एडमिनिस्ट्रेशन	रु. 900.00
तृतीय पुरस्कार	सुश्री कांति सिंह सेंघर, तकनीकी अधिकारी, स्कूल ऑफ आई.टी.	रु. 750.00
हिन्दीतर पुरस्कार	सुश्री लक्ष्मी कल्याणी, प्रोग्राम कॉर्डिनेटर, ई-लर्निंग	रु. 750.00
हिन्दी नोटिंग/ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता		
प्रथम पुरस्कार	श्री साकेत राय, परियोजना सहायक, इम्बेडिड सिस्टम	रु. 1100.00
द्वितीय पुरस्कार	सुश्री पल्लवी गुप्ता, परियोजना अभियंता, एस.एन.एल.पी.	रु. 900.00
तृतीय पुरस्कार	सुश्री प्रिया, पी.एस.एस.-I एम.एम.जी.	रु. 750.00
हिन्दीतर पुरस्कार	श्री वीरेन्द्र छेत्री, परियोजना सहायक, एस.एन.एल.पी.	रु. 750.00
कविता प्रतियोगिता		
प्रथम पुरस्कार	श्री पंकज भारती, प्रशासन	रु. 1100.00
द्वितीय पुरस्कार	श्री साकेत राय, परियोजना सहायक, इम्बेडिड सिस्टम	रु. 900.00
तृतीय पुरस्कार	श्री पलविंदर सिंह, परियोजना सहायक एस.एन.एल.पी.	रु. 750.00
हिन्दीतर पुरस्कार	श्री वीरेन्द्र छेत्री, परियोजना सहायक, एस.एन.एल.पी.	रु. 750.00
भाषण प्रतियोगिता		
प्रथम पुरस्कार	सुश्री मेघा गर्ग, परियोजना अभियंता-II, बी.डी.पी.एम.	रु. 1100.00
द्वितीय पुरस्कार	श्री पलविन्दर सिंह, परियोजना सहायक, एस.एन.एल.पी.	रु. 900.00
तृतीय पुरस्कार	श्री रवि पयाल, तकनीकी अधिकारी, स्कूल ऑफ इलेक्ट्रॉनिक्स	रु. 750.00
हिन्दीतर पुरस्कार	श्री सौरिश बेहरा, पी.टी.ओ., इम्बेडिड सिस्टम	रु. 750.00

हिन्दी टंकण प्रतियोगिता		
प्रथम पुरस्कार	श्री प्रमोद कुमार, पी.एस.एस., एस.एन.एल.पी.	रु. 1100.00
द्वितीय पुरस्कार	श्री चन्द्र मोहन, परियोजना सहायक, एस.एन.एल.पी.	रु. 900.00
तृतीय पुरस्कार	श्री गजेन्द्र सिंह, पी.एस.एस., डाटा सेंटर	रु. 750.00
हिन्दीतर पुरस्कार	श्री वीरेन्द्र छेत्री, परियोजना सहायक, एस.एन.एल.पी.	रु. 750.00
डिजिटल इंडियाः हिन्दी में पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन		
प्रथम पुरस्कार	सुश्री मेघा गर्ग, परियोजना अभियंता-II, बी.डी.पी.एम.	रु. 1100.00
द्वितीय पुरस्कार	श्री रवि पयाल, तकनीकी अधिकारी, स्कूल ऑफ इलेक्ट्रॉनिक्स	रु. 900.00
तृतीय पुरस्कार	श्री गौर मोहन, एस.टी.ओ., एस.एन.एल.पी.	रु. 750.00
हिन्दीतर पुरस्कार	श्री अमिय मोहंती, परियोजना अभियंता, एस.एन.एल.पी.	रु. 750.00

सी-डैक, नोएडा के छात्र/छात्राओं द्वारा

<u>हिन्दी निबंध प्रतियोगिता</u>

प्रथम पुरस्कार - सुश्री सलोनी, एम.बी.ए. (आई.टी.), सेमेस्टर 1
द्वितीय पुरस्कार - सुश्री शिप्रा, एम.सी.ए., सेमेस्टर 3
तृतीय पुरस्कार - श्री उमेश कुमार, एम.टैक. (सी.एस.ई.) सेमेस्टर 1

<u>भाषण प्रतियोगिता</u>

प्रथम पुरस्कार - सुश्री आंचल, एम.सी.ए., सेमेस्टर 1
द्वितीय पुरस्कार - सुश्री अंकिता झा, एम.सी.ए. सेमेस्टर 1
तृतीय पुरस्कार - श्री विनय, एम.सी.ए. सेमेस्टर 1

♦♦♦

सी-डैक, नोएडा के अनुसंधान भवन में दीपावली के अवसर पर पुष्प रंगोली

सी-डैक, नोएडा के अनुसंधान भवन में दीपावली के अवसर पर पुष्प रंगोली

कविता प्रतियोगिता के अवसर पर प्रतिभागी

कविता प्रतियोगिता के अवसर पर प्रतिभागी

भाषण प्रतियोगिता के अवसर पर प्रतिभागी

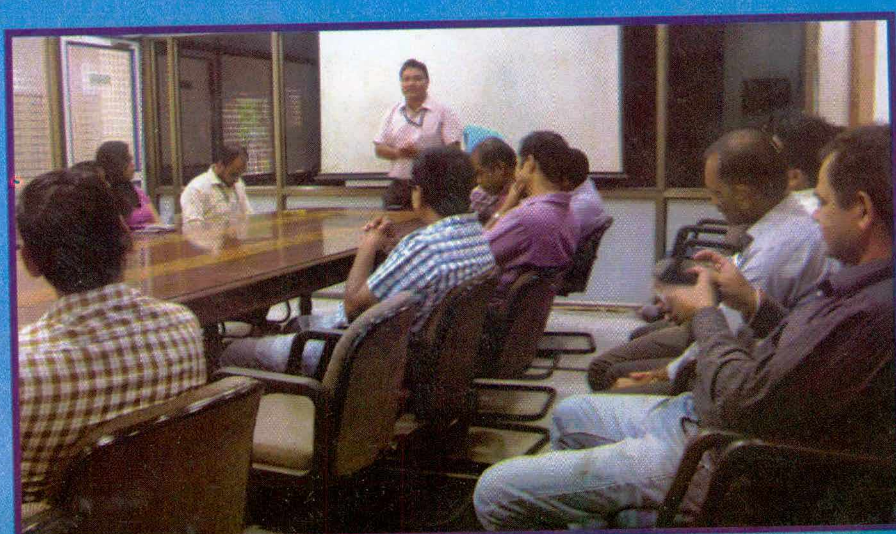

भाषण प्रतियोगिता के अवसर पर प्रतिभागी

पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन देते हुए प्रतिभागी

पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन देखते हुए निर्णायक-गण

टंकण परीक्षा देते हुए प्रतिभागी

हिन्दी पखवाड़ा 2015 ,पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर सरस्वती वंदना

हिन्दी पखवाड़ा 2015 ,पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर अतिथियों का स्वागत

हिन्दी पखवाड़ा 2015 ,पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर अतिथि को पुष्पगुच्छ भेंट

हिन्दी पत्रिका 'अभिव्यक्ति' के सातवें अंक का विमोचन

हिन्दी पखवाड़ा, 2015 समारोह के अवसर पर आसीन आतिथिगण

हिन्दी पखवाड़ा समारोह में अतिथि-गण

सी-डैक, नोएडा में नववर्ष-2016 की पूर्व-संध्या पर आयोजित कार्यक्रम

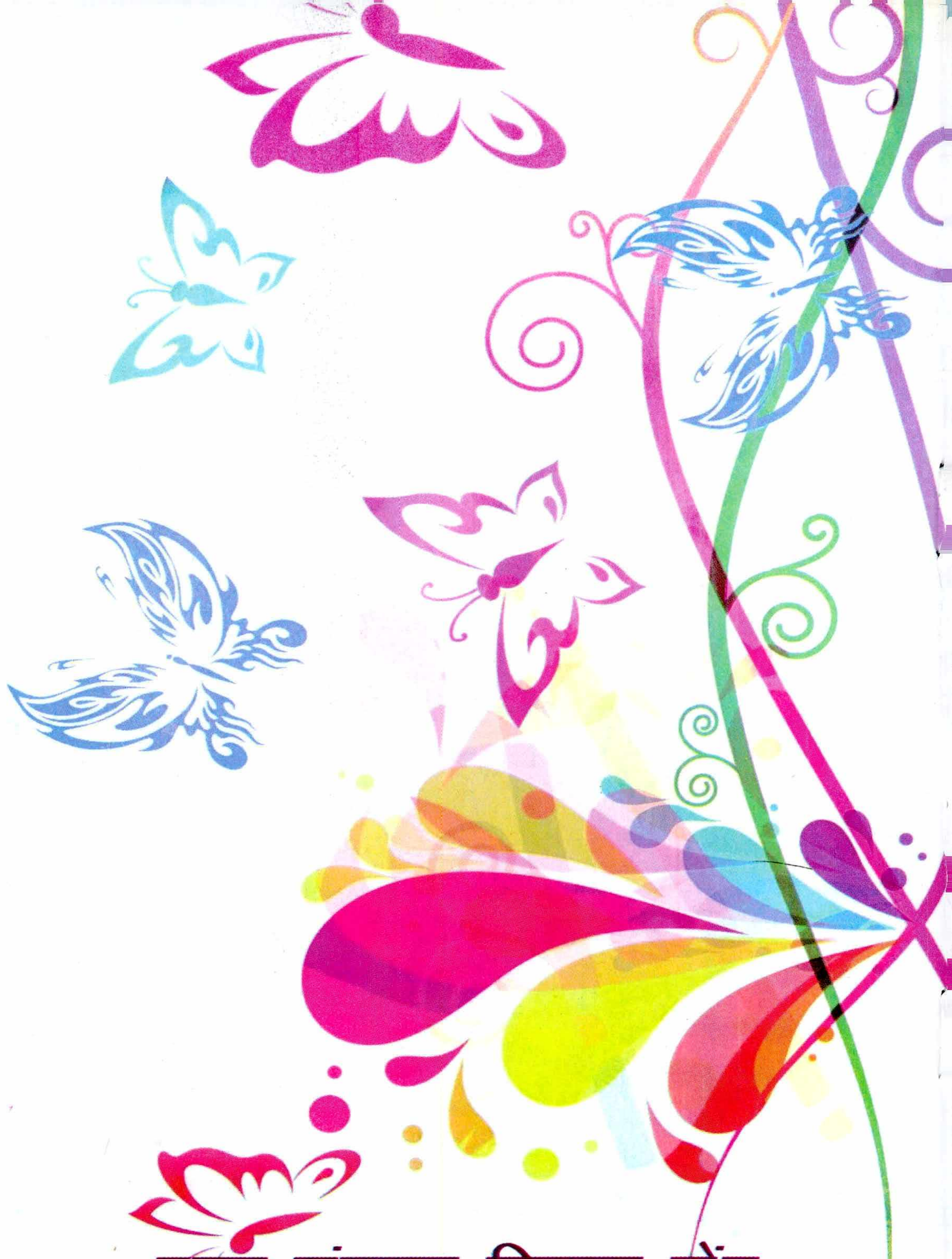

प्रगत संगणन विकास केंद्र

अनुसंधान भवन, सी–56/1, संस्थागत क्षेत्र

सेक्टर –62, नौएडा–201307

फोनः 0120–3063311–13, फैक्सः 0120–3063317